सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

जरुरत से ज्यादा हर चीज प्रकृति के खिलाफ है।
-हिप्पोक्रेटीस

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 12 ● अंक 95 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार 11 मई, 2026

मुंबई की प्लेऑफ की उमीदों पर... 7 | बिहार में एनडीए का परिवारवाद... 3 | नौ साल में ये सरकार कुछ न कर... 2

आर्थिक लॉकडाउन के संकेत!

डीजल के दाम बढ़े तो निश्चित थाली कांपेगी

- » देश के दरवाजे पर खड़ा आर्थिक प्रलय कैसे बचेगा आम आदमी?
- » राहुल गांधी का वार पीएम मोदी के बस का नहीं देश चलाना
- » अमीर संभल जाएगा गरीब कहां जाएगा
- » ईएमआई, फीस, सिसकती गृहणियां मध्यम वर्ग की खामोश चीख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के राजनीतिक गलियारों में दिए गए भाषण कभी-कभी आने वाली तबाही की दस्तक भी होते हैं। और इस बार जो संकेत मिले हैं उन्होंने लाखों परिवारों की नींद उड़ा दी है। प्रधानमंत्री के हालिया संबोधन के बाद देश के भीतर एक बेचैनी गहराती दिखाई दे रही है। जनता के मन में सवाल उठ रहे हैं कि क्या भारत अब महंगाई के दूसरे और कहीं अधिक खतरनाक दौर में प्रवेश करने जा रहा है? क्या युद्ध, वैश्विक अस्थिरता, ऊर्जा संकट और घरेलू आर्थिक दबाव मिलकर आम आदमी की कमर तोड़ने वाले हैं?

इन सवालों का जवाब आसान नहीं है लेकिन जमीन पर जो संकेत दिखाई दे रहे हैं वह निश्चित तौर पर चिंता पैदा करने वाले हैं। तेल कंपनियों पर बढ़ता दबाव गैस सिलेंडर की कीमतों में तेज वृद्धि डीजल और पेट्रोल की कीमतों पर संभावित दबाव और इसके बाद रोजमर्रा की हर वस्तु के महंगे होने का डर यह सिर्फ अर्थशास्त्र का विषय नहीं है बल्कि करोड़ों परिवारों के अस्तित्व का सवाल बनता जा रहा है। विधानसभा चुनावी नतीजों के बाद पीएम मोदी ने आर्थिक सुनामी की आहट को परिभाषित कर दिया है। जैसा की आंशका जताई जा रही थी और एक्सपर्ट का मानना था कि जनता जनार्दन चुनावी नतीजों तक युद्ध के असर से बची हैं।

"वैश्विक बाजार में तेल की कीमतें, युद्ध की परिस्थितियां, डॉलर की मजबूती, आयात लागत यह सब ऐसे कारक हैं जिन्हें कोई भी देश पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकता। लेकिन जनता इन जटिल आर्थिक समीकरणों को नहीं देखती। जनता सिर्फ इतना देखती है कि उसकी थाली छोटी हो रही है, बच्चों की जरूरतें अधूरी रह रही हैं और भविष्य धुंधला होता जा रहा है।"

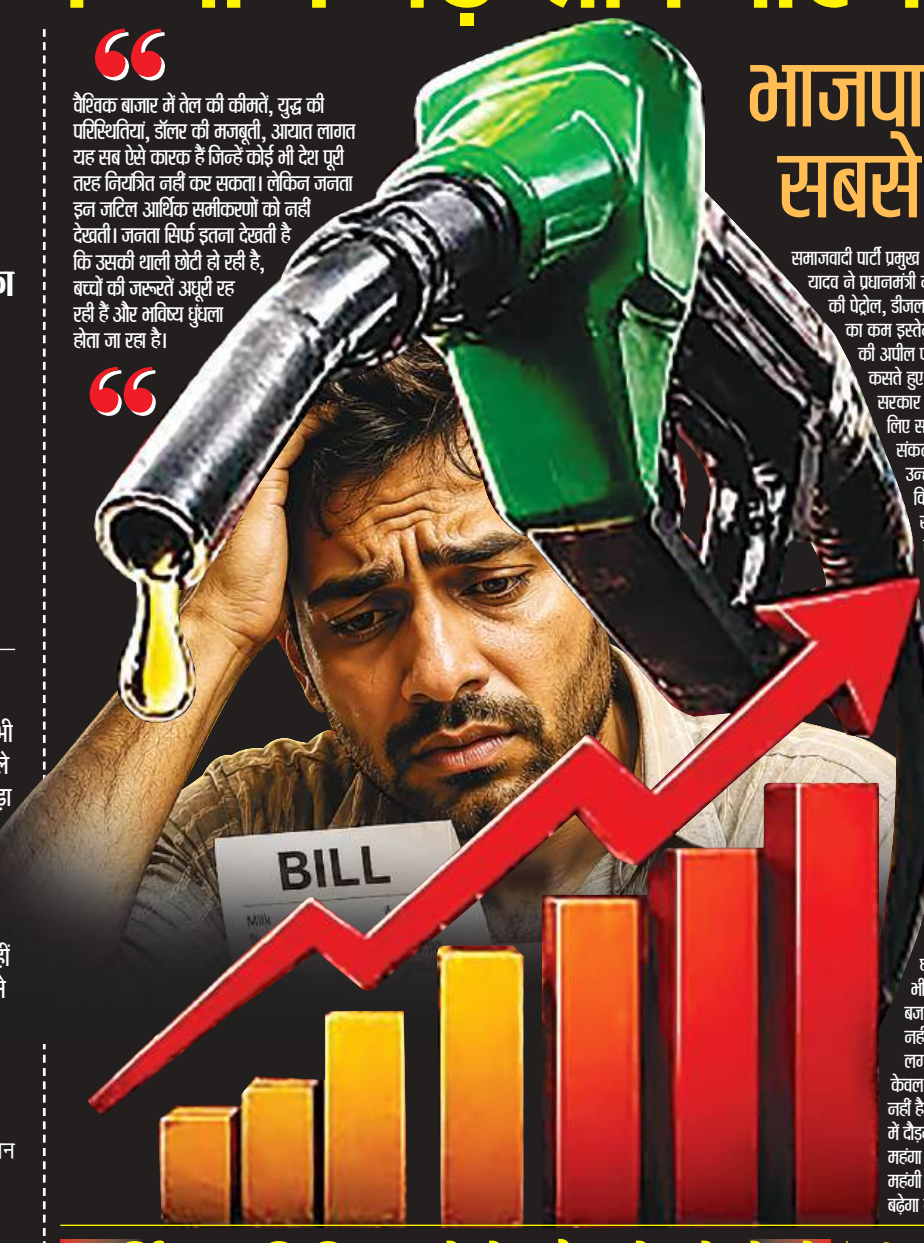

भाजपा सरकार ही देश के लिए सबसे बड़ा संकट : अखिलेश

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पेट्रोल, डीजल और गैस का कम इस्तेमाल करने की अपील पर तंज कसते हुए भाजपा सरकार को देश के लिए सबसे बड़ा संकट बताया। उन्होंने कहा कि चुनाव खत्म होते ही सरकार को आर्थिक हालात और पाबंदियों की याद आ गई, जबकि चुनाव के दौरान भाजपा नेताओं ने जमकर संसाधनों का इस्तेमाल किया। सपा प्रमुख ने महंगाई, गिरते रुपये, बेरोजगारी और विदेश नीति को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा हर मोर्चे पर विफल साबित हुई है और जनता अब इसका जवाब देने के लिए तैयार है। पूर्व सीएम ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि चुनाव खत्म होते ही पीएम मोदी को संकट याद आ गया। दरअसल देश के लिए संकट सिर्फ एक है और उसका नाम है भाजपा। इतनी सारी पाबंदियां लगानी पड़ीं तो 'पांच ट्रिलियन डॉलर की जुमलाई अर्थव्यवस्था कैसे बनेगी? लगता है भाजपा सरकार के हाथ से लगाम पूरी तरह छूट गई है। डॉलर आसमान छू रहा है और देश का रुपया पातालोन्मुखी हो गया है। सोना न खरीदने की अपील जनता से नहीं भाजपाइयों को अपने भ्रष्ट लोगों से करनी चाहिए क्योंकि जनता तो वैसे भी 1.5 लाख तोले का सोना नहीं खरीद पा रही है। भाजपाई ही अपनी काली कमाई का स्वर्णीकरण करने में लगे हैं। हमारी बात गलत लग रही हो तो लखनऊ से लेकर कटक तक पता कर लीजिए या अहमदाबाद से लेकर गुवाहाटी तक। वैसे सारी पाबंदियां चुनाव के बाद ही क्यों याद आई है? भाजपाइयों ने चुनाव में जो हजारों चार्टर हवाई यात्राएं करीं वो क्या पानी से उड़ रहीं थीं? वो क्या होटलों में नहीं ठहर रहे थे या सिलेंडर की फोटो लगाकर खाना बनाकर खा रहे थे?

महंगाई कभी अकेली नहीं आती... वह अपने साथ भूख, डर और गुस्सा भी लाती है

सबसे बड़ा संकट यह है कि महंगाई कभी अकेले नहीं आती। वह अपने साथ बेरोजगारी, सामाजिक तनाव, घरेलू कलह और मानसिक दबाव भी लेकर आती है। जब रसोई का बजट बिगड़ता है तो सिर्फ थाली छोटी नहीं होती, रिश्तों में भी दरारें आने लगती हैं। भारत जैसे देश में ईंधन केवल गाड़ियों को चलाने वाला साधन नहीं है। यह पूरी अर्थव्यवस्था की नसों में दौड़ने वाला रक्त है। ट्रक का डीजल महंगा होगा तो खेत से मंडी तक सब्जी महंगी पहुंचेगी। मालगाड़ी का खर्च बढ़ेगा तो फैक्ट्री से दुकान तक सामान महंगा पहुंचेगा। बिजली उत्पादन महंगा होगा तो उद्योगों की लागत बढ़ेगी। और अंततः इसका बोझ उस आम आदमी की जेब पर पड़ेगा जिसकी आय वर्षों से लगभग स्थिर है। भारत की अर्थव्यवस्था पिछले कुछ वर्षों में कई झटकों से गुजरी है। महामारी ने करोड़ों लोगों की बचत खत्म कर दी। छोटे व्यापार टूट गए। मध्यम वर्ग ने अपनी जमा पूंजी खर्च कर दी। उसके बाद वैश्विक युद्धों और कच्चे तेल की अस्थिर कीमतों ने बाजार को झकझोर दिया। ऐसे समय में अगर ईंधन और आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में एक और बड़ी वृद्धि होती है तो उसका असर केवल आर्थिक नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक भी होगा।

अब चूल्हा डराने लगे

महंगाई का सबसे गहरा और सबसे शांत संघर्ष भारतीय घरों की रसोई में लड़ा जाता है। यहां कोई टीवी कैमरा नहीं होता कोई राजनीतिक भाषण नहीं होता लेकिन हर दिन एक अदृश्य युद्ध चलता है सीमित पैसे में पूरे परिवार को संभालने का युद्ध। भारतीय गृहिणी वर्षों से घर की अर्थव्यवस्था की सबसे मजबूत प्रबंधक रही है। वह जानती है कि महीने का राशन कैसे चलाना है बच्चों की जरूरतों को कैसे संतुलित करना है और कम आय में भी घर को कैसे टिकाए रखना है। लेकिन जब हर महीने दाल, तेल, गैस, दूध और सब्जियों के दाम बढ़ते हैं, तब यह संतुलन टूटने लगता है। गृहिणियां अक्सर अपने हिस्से की जरूरतें सबसे पहले कम करती हैं। कई घरों में महिलाएं अपने लिए कपड़े खरीदना टाल देती हैं फल-दूध कम कर देती हैं या छोटी इच्छाओं को दबा देती हैं ताकि परिवार पर बोझ न बढ़े। महंगाई केवल बाजार में कीमत नहीं बढ़ाती, वह महिलाओं के त्याग को भी बढ़ा देती है। सबसे ज्यादा असर बच्चों वाले परिवारों पर पड़ता है। स्कूल फीस, ट्यूशन, दूध, पोषण और स्वास्थ्य खर्च – हर तरफ बढ़ती लागत गृहिणियों के लिए तनाव का कारण बनती है। मध्यम वर्गीय परिवारों में यह दबाव और अधिक दिखाई देता है, जहां आय सीमित है लेकिन सामाजिक अपेक्षाएं बड़ी हैं।

आर्थिक अनिश्तिताओं के दौर में लोगों से जिम्मेदारी निभाने का आह्वान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हैदराबाद में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने देशवासियों से वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के दौर में जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया आर्थिक उथल पुथल सप्लाई चेन में व्यवधान और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों से जूझ रही है जिसका असर बढ़ती महंगाई के रूप में सामने आ रहा है। ऐसे समय में भारत को मजबूत बनाए रखने के लिए सामूहिक भागीदारी बेहद जरूरी है। प्रधानमंत्री ने देशभक्ति की परिभाषा को व्यापक बताते हुए कहा कि यह केवल देश के लिए बलिदान देने तक सीमित नहीं है बल्कि कठिन समय में अनुशासित और जिम्मेदार जीवन जीना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे अपनी दैनिक आदतों में बदलाव लाकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती दें। उन्होंने लोगों से एक साल तक गैर-जरूरी सोने की खरीदारी से बचने का आग्रह किया ताकि विदेशी मुद्रा के अनावश्यक खर्च को रोका जा सके। साथ ही उन्होंने पेट्रोल और डीजल के संयमित उपयोग पर जोर देते हुए कहा कि तेल की बचत से देश की आर्थिक स्थिति को मजबूती मिलेगी। पीएम मोदी ने ईंधन की खपत कम करने के लिए कई सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि जहां संभव हो वहां मेट्रो और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें। निजी वाहनों के इस्तेमाल के दौरान कार पूलिंग अपनाएं। माल ढुलाई के लिए रेल परिवहन को प्राथमिकता दें और इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा दें। गौरतलब है कि हैदराबाद में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा था कि आज दुनिया आर्थिक उथल-पुथल, सप्लाई चेन में व्यवधान और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों से जूझ रही है, जिसका असर बढ़ती महंगाई के रूप में सामने आ रहा है। ऐसे समय में भारत को मजबूत बनाए रखने के लिए सामूहिक भागीदारी बेहद जरूरी है।

पीएम मोदी की बस की बात नहीं रहा देश चलाना : राहुल गांधी

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा है कि पीएम मोदी ने 10 मई को जनता से त्याग मांगे। सोना मत खरीदो, विदेश मत जाओ, पेट्रोल कम जलाओ, खाद और खाने का तेल कम करो, मेट्रो में चलो, घर से काम करो। ये उपदेश नहीं-ये नाकामी के सबूत हैं। 12 साल में देश को इस मुकाम पर ला दिया है कि जनता को बताना पड़ रहा है-क्या खरीदे, क्या न खरीदे, कहां जाए, कहां न जाए। हर बार जिम्मेदारी जनता पर डाल देते हैं ताकि खुद जवाबदेही से बच निकलें। देश चलाना अब पीएम मोदी के बस की बात नहीं।

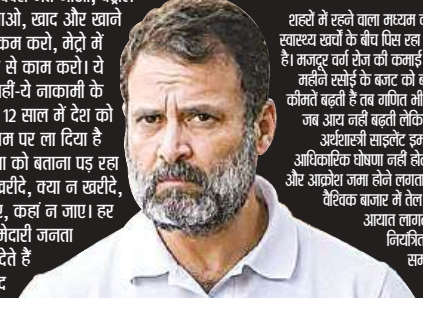

घरों के भीतर शुरू हो चुका है खामोश युद्ध

शहरों में रहने वाला मध्यम वर्ग पहले ही ईएमआई, स्कूल फीस, बिजली बिल और स्वास्थ्य खर्चों के बीच पिस रहा है। गांवों में किसान खेती की बढ़ती लागत से परेशान है। मजदूर वर्ग रोज की कमाई और रोज के खर्च के बीच फंसा हुआ है। गृहिणियां हर महीने रसोई के बजट को बचाने के लिए गणित लगाती हैं। लेकिन जब हर तरफ कीमतें बढ़ती हैं तब गणित भी हार मान जाता है। सबसे भयावह स्थिति तब बनती है जब आय नहीं बढ़ती लेकिन खर्च लगातार बढ़ते जाते हैं। यही वह स्थिति है जिसे अर्थशास्त्री साइलेंट इमरजेंसी कहते हैं। इसमें कोई सायरन नहीं बजता कोई आधिकारिक घोषणा नहीं होती लेकिन धीरे-धीरे समाज के भीतर तनाव, अविश्वास और आक्रोश जमा होने लगता है। सरकारों के सामने भी अपनी मजबूरियां होती हैं। वैश्विक बाजार में तेल की कीमतें, युद्ध की परिस्थितियां, डॉलर की मजबूती, आयात लागत यह सब ऐसे कारक हैं जिन्हें कोई भी देश पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकता। लेकिन जनता इन जटिल आर्थिक समीकरणों को नहीं देखती। जनता सिर्फ इतना देखती है कि उसकी थाली छोटी हो रही है।

नौ साल में ये सरकार कुछ न कर सकी तो अब नौ महीने में क्या करेगी : अखिलेश यादव

सपा प्रमुख ने कसा भाजपा पर तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने यूपी में मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर भाजपा को घेरा है। उन्होंने तंज भरे लहजे में एक्स पर बयान दिया कि आखिरी 9 महीनों में ये मंत्री क्या कर लेंगे जब 9 साल में ये सरकार कुछ न कर सकी।

उन्होंने एक्स पर दिए गए बयान में कहा कि उत्तर प्रदेश में मंत्रिमंडल का विस्तार पर जनता के विचार और सवाल उप्र में मंत्रिमंडल में केवल 6 रिक्तियाँ हैं, इससे ज़्यादा तो दूसरे दल से पाला बदल कर आए लोग हैं, क्या उन सभी को मंत्री पद से नवाज़ा जाएगा? क्या उनमें से सबसे कमज़ोर को चुना जाएगा जिससे कि उसकी कमज़ोरी कुछ कम हो जाए? एक समाज के कई विधायकों में से किसी एक को चुना जाएगा तो चुनने का आधार क्या होगा? अगर ऐसा हुआ तो बाक़ी दल-बदलुओं का क्या होगा? - उनकी उपेक्षा व अपमान को क्या कुछ ले-देकर शांत करा जाएगा? या उन्हें भी ये अहसास करा दिया जाएगा कि भाजपा किसी की सगी नहीं है? - बाक़ी छूटे हुए लोग क्या अपने को ठगा सा महसूस नहीं करेंगे?- वो अपने चुनाव क्षेत्र में मुँह दिखाने लायक बचेंगे क्या? - इसके अतिरिक्त प्रश्न ये भी है कि उनके अपने दल के जो लोग मंत्री बनने के इंतज़ार में सूखकर काँटा हो गये हैं, उन बेचारों का क्या होगा?

वो तो ठग हैं पुराने, तुम ये सच न जाने

जिन वर्तमान मंत्रियों के विभाग कम किये जाएंगे तो क्या इससे जनता के बीच ये संदेश नहीं जाएगा कि वो नाकाम रहे, इसलिए उनसे मंत्रालय छीन लिया गया है?- ऐसे मंत्री तो बिना लड़े ही क्या अपना चुनाव हार नहीं जाएंगे?- साथी दलों को प्रतीक्षा के स्थान पर और कुछ मिलेगा या फिर उनको ये कहकर उपेक्षित कर दिया जाएगा। तुम थे जिनके सहारे, वो हुए न तुम्हारे। वो तो ठग हैं पुराने,तुम ये सच न जाने।

और हां जनता ये भी पूछ रही है कि आखिरी 9 महीनों में ये मंत्री क्या कर लेंगे

9 महीनों में ये मंत्री भी क्या कर सकेंगे

जब 9 साल में ये सरकार कुछ न कर सकी। ये भी केवल वही करेंगे जो भाजपा सरकार ने किया है -भ्रष्टाचार और अत्याचार! पीडीए पर वार-ही-वार! महंगाई-बेकारी की मार! ये जीना कर देंगे दुश्वार!

सपा जमीनी कार्यकर्ताओं के साथ बूथ पर करेगी फोकस

सपा ने अंदरखाने पश्चिम बंगाल चुनाव के नतीजों से कई अहम सबक लिए हैं। राजनीतिक परामर्श फर्म के पेड वर्कर्स से ज्यादा राजनीतिक कार्यकर्ताओं से काम लिया जाएगा। वहीं, किसी भी मुद्दे पर आंदोलन से ज्यादा मतदाता सूची पर निगाह रखी जाएगी। सपा को आशंका है कि भाजपा मौका मिलते ही मतदाता सूची में खेल कर सकती है। अगर इन बातों पर ध्यान नहीं दिया तो सपा के लिए यह नुकसानदेह साबित होगा। सपा के रणनीतिकार मानते हैं कि पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण (एसआईआर) से संबंधित पार्टी का काम तृणमूल कांग्रेस ने पूरी तरह से आई-पैक संस्था को सौंप दिया था। जबकि, यूपी में सपा ने इस काम में अपने कार्यकर्ताओं को पीडीए प्रहरी बनाकर लगाया। अंतर साफ दिखा कि फाइनल मतदाता सूची में तार्किक गलती और संदिग्ध श्रेणी के कारण पश्चिम बंगाल में 27.16 लाख वोट कटे, जबकि यूपी में नोटिस पाने वाले 3.26 करोड़ मतदाताओं में से सिर्फ 3.50 लाख का ही नाम मतदाता सूची से डिलीट हुआ।

ईवीएम से जीतकर ही हटाएंगे ईवीएम

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि लोकतंत्र और संविधान बचाने के लिए समाजवादियों को चुनाव माफिया से लड़ना है। जब अमेरिका, इंग्लैंड और जर्मनी में वोट बैलेट से पड़ता है तो यहां भी वोट बैलेट से पड़े। सपा ने लोकसभा चुनाव में भाजपा को ईवीएम से हराया है। हम फिर भाजपा को ईवीएम से हराकर ईवीएम को हटाने का काम करेंगे। साल लगे या सदी हम ईवीएम को हटाकर ही रहेंगे।सपा अध्यक्ष ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि स्मार्ट मीटर को रिमोट से भी चलाया जा सकता है। जब स्मार्ट मीटर से बेईमानी हो रही है तो ईवीएम से क्यों नहीं हो सकती है। अखिलेश ने कहा कि एनसीआरबी के सरकारी आंकड़े खुद बोल रहे हैं कि महिलाओं व बेटियों के साथ यूपी में अपराध देश में सबसे ज्यादा है। यहां महिलाओं के साथ ही एससी-एसटी पर भी सबसे ज्यादा अत्याचार हो रहे हैं। समाजवादी सरकार बनने पर छात्राओं की केजी से पीजी तक शिक्षा मुफ्त होगी।

मेरी निगाह सिर्फ यूपी पर

तमिलनाडु में चुनाव बाद की स्थिति पर अखिलेश बोले, मुझे इसकी जानकारी नहीं। मैं सिर्फ यूपी देख रहा हूं और पश्चिमी बंगाल में जो हुआ, उस पर नजर रख रहा हूं। साथ ही कहा कि देश में इंडिया गठबंधन मजबूत रहेगा। उन्होंने कहा कि नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का निर्माण इसे बेचने के लिए किया गया है।

किसी पार्टी के दफ्तर पर न जाएं सपा कार्यकर्ता

अखिलेश ने कहा कि वह अपने कार्यकर्ताओं से अपील करते हैं कि जोश में किसी भी पार्टी के दफ्तर के बाहर प्रदर्शन करने न जाएं। ऐसा तभी करें, जब पार्टी नेतृत्व की ओर से इसका आह्वान किया जाए। अखिलेश से भाजपा दफ्तर के बाहर सपा के कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन को लेकर सवाल पूछा गया है।

सोशल मीडिया पर आमने-सामने आए पहलवान और पूर्व सांसद

झुकाने की ताकत नहीं किसी तलवार में : फोगाट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोंडा। पहलवान विनेश फोगाट और पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह के बीच चल रहा विवाद एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा में है। नंदिनी नगर में आयोजित सीनियर ओपन रैंकिंग कुश्ती प्रतियोगिता को लेकर शुरू हुआ यह विवाद अब इशारों और शेरो-शायरी तक पहुंच गया है। सोशल मीडिया पर दोनों के आरोप-प्रत्यारोप की खेल व राजनीतिक जगत में चर्चा हो रही है।

पहलवान विनेश फोगाट ने एक्स पर एक भावुक पोस्ट साझा की है। इसमें लिखा, 'जिंदगी फंसी है किसी मझधार में, जमाना ढूंढ़ता है खामी मेरे किरदार में... जिंदगी तेरा सर सदा बुलंद रखा है, झुकाने की ताकत नहीं किसी तलवार में... !विनेश की इस पोस्ट को उनके समर्थक संघर्ष और आत्मसम्मान से जोड़कर देख रहे हैं। चर्चा है कि यह पोस्ट गोंडा में रविवार को शुरू हुई प्रतियोगिता और उससे जुड़े घटनाक्रमों की ओर इशारा कर रही है।

शोहरत की बुलंदी भी पलभर का तमाशा है : बृजभूषण शरण सिंह

विनेश की इस पोस्ट के कुछ ही घंटों बाद पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने भी सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने एक शेर साझा करते हुए लिखा, 'शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है, जिस शाख पर बैठे हो, वह टूट भी सकती है।' सोशल मीडिया यूजर इसे विनेश की पोस्ट का जवाब मान रहे हैं। हालांकि, दोनों ने सीधे तौर पर एक-दूसरे का नाम नहीं लिया है, लेकिन समय और संदर्भ को देखते हुए इसे सीधा मुकाबला माना जा रहा है। विवाद की जड़ 10 से 12 मई तक नंदिनी नगर में होने वाली सीनियर ओपन रैंकिंग कुश्ती प्रतियोगिता है। हाल ही में विनेश फोगाट ने इस आयोजन स्थल को लेकर अपनी असहजता जताई थी। इसके बाद पूर्व सांसद ने स्पष्ट किया था कि इस प्रतियोगिता से उनका कोई सीधा संबंध नहीं है। उन्होंने कहा था कि आयोजन भारतीय कुश्ती संघ की ओर से कराया जा रहा है और वह इसमें हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं।

असम विधानसभा चुनाव में हार की पूरी जिम्मेदारी मेरी : गौरव गोगोई

» असम कांग्रेस अध्यक्ष बोले- आंतरिक समीक्षा प्रक्रिया शुरू है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। असम कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई ने हाल ही में हुए असम विधानसभा चुनाव के परिणामों को बेहद निराशाजनक बताया और कहा कि वे इस परिणाम की पूरी जिम्मेदारी लेंगे। उन्होंने ये टिप्पणी पार्टी के नवनिर्वाचित विधायकों के साथ हुई समीक्षा बैठक के दौरान की।

गोगोई ने पत्रकारों से कहा कि असम विधानसभा चुनाव के हालिया नतीजे बेहद निराशाजनक हैं। मैंने पहले भी कहा है कि मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी लेता हूं। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने पार्टी के उच्च कमान को सूचित कर दिया है और आंतरिक समीक्षा प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। गौरव गोगोई ने आगे कहा कि मैंने उच्च कमान को भी सूचित कर दिया है और संगठनात्मक पुनर्गठन के साथ-साथ अगले कदमों की रूपरेखा तैयार करने

का निर्णय उच्च कमान को ही करना है। साथ ही, हमने आंतरिक समीक्षा प्रक्रिया शुरू कर दी है। मुझे लगता है कि अगले महीने हम उन वास्तविक कारणों का पता लगाने की कोशिश करेंगे जो 26 के इस विशेष परिणाम की व्याख्या कर सकते हैं। असम विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने निर्णायक जीत हासिल करते हुए विपक्ष की 75 सीटों के मुकाबले 102 सीटें जीतीं। भाजपा को 82 सीटें मिलीं, जबकि उसके सहयोगी असम गण परिषद (एजीपी) और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीओपीएफ) को 10-10 सीटें प्राप्त हुईं।

हरियाणा की सैनी सरकार पर विपक्ष का प्रहार

» सरकार कर्मचारियों की समस्याओं की अनदेखी कर रही : दुष्यंत चौटाला

» इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह भी कर्मचारियों के समर्थन में

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने प्रदेश में चल रही सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का समर्थन करते हुए उनकी मांगों को पूरी तरह जायज बताया है। कहा कि कच्चे कर्मचारियों को पक्का करना, समान काम के लिए समान वेतन, महंगाई भत्ता, नियमित भर्ती, ठेका प्रथा समाप्त करना और न्यूनतम वेतन बढ़ाना कर्मचारियों के अधिकार हैं।

भाजपा सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप

लगाते हुए कहा कि सरकार कर्मचारियों की समस्याओं की अनदेखी कर रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि हड़ताल के कारण शहरों में कचरे के ढेर लग रहे हैं। बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है और आमजन परेशान हैं। सरकार से तुरंत वार्ता कर इसका समाधान निकालने की मांग की है। वहीं इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला ने हरियाणा में सफाई कर्मचारियों और फायर ब्रिगेड कर्मचारियों की हड़ताल का समर्थन करते हुए कहा कि सरकार को उनकी मांग जल्द पूरी करनी चाहिए। हड़ताल से प्रदेशभर में सफाई व्यवस्था प्रभावित हुई है। जगह-जगह कचरे के ढेर लग रहे हैं और जनता परेशान है लेकिन सरकार समस्या के समाधान की बजाय उदासीन बनी हुई है।

चौटाला ने कहा कि कच्चे कर्मचारियों को पक्का करना, खाली पद भरना, न्यूनतम वेतन बढ़ाना और ठेका प्रथा समाप्त करना सफाई कर्मचारियों के अधिकार हैं। वहीं फायर ब्रिगेड कर्मचारियों की प्रशिक्षित ड्राइवरों और नियमित भर्ती की मांग भी जरूरी है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार के इशारे पर अधिकारी आंदोलनरत कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। सरकार की नीतियां किसान, मजदूर और दलित विरोधी हैं।

बिहार में एनडीए का परिवारवाद हावी!

कई पूर्व दिग्गज नेताओं के बेटे बन गए मंत्री

» जदयू, लोजपा, हम के कोटे से मिला मौका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में कभी एनडीए कभी विपक्षी दलों के ऊपर परिवारवाद के नाम पर घेरती थी। वक्त का तकाजा देखिए आज एनडीए के सहयोगी दलों के बड़े नेताओं को मंत्री पद देकर वह भी उसी रास्ते पर चल दी है।

बिहार में सम्राट चौधरी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया है, जिसमें सबसे बड़ा आकर्षण पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार का मंत्री बनना रहा। इस नए मंत्रिमंडल में अब तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे शामिल हैं, जो बिहार की राजनीति में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के मंत्रिमंडल का गुरुवार को पूर्ण विस्तार हुआ, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार को मंत्री बनाया जाना प्रमुख आकर्षण रहा।

तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे शामिल

चौधरी के मंत्रिमंडल में अब तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे शामिल हैं - नीतीश कुमार के बेटे निशांत, जगन्नाथ मिश्रा के बेटे नीतीश मिश्रा और जीतन राम मांझी के बेटे संतोष कुमार सुमन। तीनों ने गुरुवार को शपथ ली। एनडीए ने पटना के गांधी मैदान में शपथ ग्रहण समारोह का भव्य आयोजन किया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल हुए। हवाई अड्डे से समारोह स्थल जाते समय, सड़क के दोनों ओर कतार में खड़े लोगों ने मोदी के वाहन पर फूलों की पंखुड़ियां बरसाईं। पूर्व मुख्यमंत्री

नीतीश कुमार, केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह, जेपी नड्डा, जीतन राम मांझी और चिराग पासवान, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन और आरएलएम प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा सहित कई गणमान्य व्यक्ति समारोह में उपस्थित थे। इंजीनियरिंग स्नातक निशांत कुमार, जो लंबे समय से सक्रिय राजनीति से दूर रहे हैं, ने जेडीयू नेतृत्व के लगातार आग्रह के बाद मंत्री पद की शपथ ली। खबरों के मुताबिक, निशांत कुमार ने शुरू में यह प्रस्ताव ठुकरा दिया था, यह कहते हुए कि वे कोई भी औपचारिक पद स्वीकार करने से पहले एक समर्पित पार्टी कार्यकर्ता के रूप में अपनी साख साबित करना चाहते हैं।

भाजपा के 15 मंत्री बने

243 सदस्यीय विधानसभा में 89 विधायकों के साथ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी है और उसके 15 मंत्री हैं, जिन्होंने गुरुवार को शपथ ली। इनमें से अधिकतर वे मंत्री हैं जो पिछले साल नवंबर में एनडीए के विधानसभा चुनावों में शानदार वापसी के बाद नीतीश कुमार के मंत्रिमंडल में शामिल थे। जेडीयू के कुल 15 मंत्री हैं, जिनमें से 13 ने गुरुवार को गांधी मैदान में शपथ ली। विजय कुमार चौधरी और बिजेंद्र प्रसाद यादव ने सम्राट चौधरी के साथ अप्रैल में शपथ ली थी और उन्हें उपमुख्यमंत्री नामित किया गया था। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के नेतृत्व वाली लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) के संजय कुमार सिंह और संजय कुमार पासवान मंत्री पद पर वापस आ गए हैं, और इसी तरह केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी (हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा) और उपेंद्र कुशवाहा (राष्ट्रीय लोक मोर्चा) के पुत्र संतोष कुमार सुमन और दीपक प्रकाश भी मंत्री पद पर वापस आ गए हैं।

इंडिया गठबंधन को फिर एक करेंगे सपा प्रमुख

कांग्रेस के टीवीके को समर्थन देने पर दिखी नाराजगी

» अखिलेश ने ममता व स्टालिन का दिया साथ

» डीएमके व डीएमके के साथ सपा खड़ी रहेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। एक तरफ जहां हार से क्षेत्रीय दलों को झटका लगा है वहीं कांग्रेस को केरल में सरकार बनाने में कामयाबी मिली है और इससे वह उत्साहित है। उधर उसने तमिलनाडु में टीवीके को समर्थन देने की बात कह कर अपने सहयोगी डीएमके को नाराज कर दिया।

कांग्रेस के इस कदम से नाराज डीएमके ने गुरुवार को घोषणा की कि इंडिया ब्लॉक खत्म हो गया है, क्योंकि कांग्रेस ने एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली पार्टी से अपना गठबंधन तोड़कर टीवीके को सरकार बनाने के प्रयास में समर्थन दिया है। डीएमके विधायकों की एक महत्वपूर्ण बैठक में पार्टी ने टीवीके का साथ देने के कांग्रेस के फैसले की निंदा करते हुए चार प्रमुख प्रस्ताव पारित किए। इन सबके बीच इंडिया गठबंधन को बचाने के लिए सबसे आगे आए हैं सपा प्रमुख अखिलेश यादव। इसी क्रम में पहले वह कोलकाता जाकर ममता बनर्जी उसके बाद स्टालिन के साथ फोटों लगाकर कहा कि हम सब एक साथ हैं।

कांग्रेस के इस कदम से डीएमके नाराज

कांग्रेस के इस कदम से नाराज डीएमके ने गुरुवार को घोषणा की कि इंडिया ब्लॉक खत्म हो गया है, क्योंकि कांग्रेस ने एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली पार्टी से अपना गठबंधन तोड़कर टीवीके को सरकार बनाने के प्रयास में समर्थन दिया है। डीएमके विधायकों की एक महत्वपूर्ण बैठक में पार्टी ने टीवीके का साथ देने के कांग्रेस के फैसले की निंदा करते हुए चार प्रमुख प्रस्ताव पारित किए। बैठक में स्टालिन को राज्य की बदलती राजनीतिक स्थिति के आधार पर तत्काल राजनीतिक और प्रशासनिक निर्णय लेने का अधिकार भी दिया गया।

डीएमके और एआईडीएमके के बीच गठबंधन की सुगबुगाहट

कांग्रेस द्वारा टीवीके को समर्थन देने का निर्णय हाल के वर्षों में तमिलनाडु में हुए सबसे बड़े राजनीतिक पुनर्गठनों में से एक है और इसने राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया ब्लॉक के भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। तमिलनाडु की राजनीति इस समय अपने सबसे नाटकीय दौर से गुजर रही है। राज्य में दशकों तक एक-दूसरे की धुर विरोधी रही दो प्रमुख द्रविड़ पार्टियों— डीएमके और एआईडीएमके— के बीच गठबंधन की सुगबुगाहट ने सियासी गलियारों में भूकंप ला दिया है।

अखिलेश ने कांग्रेस पर साधा निशाना

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने तमिलनाडु में डीएमके से संबंध तोड़ने और अभिनेता-राजनेता विजय की तमिलगा वेट्री कजगम (टीवीके) को राज्य में सरकार बनाने के लिए समर्थन देने के बाद कांग्रेस पर निशाना साधा। एक्स पर एक तीखे संदेश में अखिलेश यादव ने ममता बनर्जी और एमके स्टालिन के साथ एक तस्वीर पोस्ट की और लिखा, मुश्किल समय में हम एक-दूसरे का साथ छोड़ने वाले नहीं हैं, जो तमिलनाडु में राजनीतिक उथल-पुथल के बीच कांग्रेस पर एक स्पष्ट कटाक्ष था। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद नाटकीय घटनाक्रम सामने आया, जिसमें किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला और विधानसभा त्रिशंकु हो गई। 234 सदस्यीय विधानसभा में टीवीके 108 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और बाद में उसने पांच विधायकों वाली कांग्रेस के साथ गठबंधन करने का फैसला किया, जिससे राज्य में चुनाव के बाद के राजनीतिक समीकरणों में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

एआई के दुष्प्रभाव से बचने उपायों पर भी हो नजर

एआई के दुष्प्रभाव से बचने के कई उपाय बनाए जा रहे हैं। साइबर सुरक्षा के लिए कई मॉडल बनए जा रहे हैं। पर उनके दुरुपयोग को लेकर चिंता बढ़ने लगी है। इसका काट निकालने का प्रयास किए जा रहे हैं। बता दें एआई के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के बीच एक नया मॉडल वैश्विक चिंता का केंद्र बन गया है। यह है एन्थ्रोपिक द्वारा विकसित मॉडल मिथोस। यह उन्नत प्रणाली जहां साइबर सुरक्षा के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, वहीं इसके संभावित दुरुपयोग को लेकर सरकारों, बैंकों और विशेषज्ञों के बीच गंभीर आशंकाएं भी उभर रही हैं। हम आपको बता दें कि मिथोस एक ऐसा एआई मॉडल है जो कंप्यूटर प्रणालियों में मौजूद छिपी कमजोरियों को पहचानने और उनका फायदा उठाने में सक्षम बताया गया है। कंपनी के अनुसार यह उन त्रुटियों को भी खोज सकता है जिनके बारे में सॉफ्टवेयर बनाने वालों को खुद जानकारी नहीं होती। इन्हें जीरो डे कमजोरियां कहा जाता है, क्योंकि इनके सामने आने के बाद सुधार का समय नहीं मिल पाता।

मिथोस की यही क्षमता इसे अत्यंत शक्तिशाली और साथ ही खतरनाक बनाती है। कंपनी ने सात अप्रैल को इस मॉडल के अस्तित्व की घोषणा की थी, लेकिन इसे सार्वजनिक उपयोग के लिए जारी करने से साफ इंकार कर दिया। कारण स्पष्ट है कि यदि यह तकनीक गलत हाथों में चली गई तो वैश्विक साइबर सुरक्षा को गंभीर खतरा हो सकता है। हालांकि, सीमित रूप से कुछ कंपनियों और बैंकों को इसके परीक्षण की अनुमति दी गई है ताकि वह इसके जोखिमों को समझ सकें। हाल ही में स्थिति तब और गंभीर हो गई जब यह सामने आया कि कुछ अनधिकृत लोगों ने इस मॉडल तक पहुंच हासिल कर ली थी। यह घटना इस बात का संकेत है कि इतने संवेदनशील उपकरण को पूरी तरह नियंत्रित रखना कितना कठिन है। इससे तकनीकी कंपनियों की क्षमता पर भी सवाल उठे हैं कि वह अपने सबसे जोखिमपूर्ण उत्पादों को कितनी सुरक्षित रख सकती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार मिथोस केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं बल्कि एआई की तेजी से बढ़ती शक्ति का संकेत है। पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र में जिस गति से प्रगति हुई है, उससे यह आशंका भी बढ़ी है कि अन्य कंपनियां भी जल्द ही ऐसे मॉडल विकसित कर सकती हैं। इससे साइबर हमलों और बचाव के बीच एक नई प्रतिस्पर्धा शुरू हो सकती है।

“ यह उन्नत प्रणाली जहां साइबर सुरक्षा के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, वहीं इसके संभावित दुरुपयोग को लेकर सरकारों, बैंकों और विशेषज्ञों के बीच गंभीर आशंकाएं भी उभर रही हैं। हम आपको बता दें कि मिथोस एक ऐसा एआई मॉडल है जो कंप्यूटर प्रणालियों में मौजूद छिपी कमजोरियों को पहचानने और उनका फायदा उठाने में सक्षम बताया गया है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

टीवीके यानी 'स्टार्टअप' राजनीतिक विकल्प

प्रमोद जोशी

तमिलनाडु विधानसभा के चुनाव-परिणामों ने देश में एक नए राजनीतिक 'स्टार्टअप' का नाम जोड़ा है। अभिनेता से राजनेता बने विजय की पार्टी टीवीके का चुनावी पदार्पण बेहद शानदार रहा है। 'स्टार्टअप' शब्द बिजनेस से आया है। तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों को यह नाम दिया जाता है और एक अरब डॉलर से ऊपर का कारोबार करने वाली कंपनी को 'यूनिकॉर्न' कहते हैं। माना जा रहा है कि टीवीके ने रातों-रात भारतीय राजनीति में 'यूनिकॉर्न' बनकर दिखाया है। तमिलगा वेट्री कषगम (टीवीके) ने अपने पहले ही चुनावी मुकाबले के बाद तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी), आम आदमी पार्टी (आप), असम गण परिषद (एजीपी) और वाईएसआर कांग्रेस (वाईएसआरसीपी) जैसी पार्टियों के नक्शे-कदम सफलता हासिल की है। वह बेशक पहले ही राउंड में 'यूनीकॉर्न' बनकर उभरी है, पर पर्यवेक्षक मानते हैं कि उसे अभी कठोर परीक्षा से गुजरना होगा।

अभी यह सेमीफाइनल जैसा लगता है। शायद साल-दो साल, नई सरकार आए या फिर से चुनाव कराने पड़ें। टीवीके के पीछे नौजवानों की ताकत है, जिसे जेन-जी माना जा रहा है। सोशल मीडिया के जरिए चुनाव जीतना एक बात है, लेकिन सत्ता के खेल को खेलना दूसरी बात है। इस पीढ़ी को घोषणापत्र पढ़ना, आर्थिक मुद्दों का अध्ययन करना या नेताओं की जवाबदेही का मतलब भी समझना होगा। परंपरागत राजनीति में भी युवा ही आगे आते हैं। पर समाधान झटपट नहीं मिलते और सिनेमा को नायकों की तरह खासतौर से नहीं। तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति का गहरा संबंध रहा है। अन्नादुरै, एमजीआर, करुणानिधि और जयललिता जैसे सिनेकर्मी अपनी फिल्मी लोकप्रियता के दम पर मुख्यमंत्री बने। पर वे स्पष्ट एजेंडा और दीर्घकालिक रणनीतियों वाले राजनीतिक नेताओं के रूप में परिपक्व हुए। पहली नजर में लग सकता है कि इतिहास खुद को दोहरा रहा है, एक और अभिनेता राजनीति में प्रवेश कर रहा है। लेकिन हकीकत में विजय के पीछे युवाओं का अंधाधुंध समर्थन, भोलापन है। राजनीतिक-परिपक्वता नहीं।

राज्य के मतदाता सत्ता-विरोधी लहरों पर सवार हैं। दशकों से वे द्रमुक और अद्रमुक दोनों को रोटेट करके नियंत्रित रखते आए हैं। मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य में जयललिता के निधन के बाद, नेतृत्व के अभाव और पार्टी की अंदरूनी खींचतान के कारण अन्नाद्रमुक पृष्ठभूमि में चली गई है। इस शून्य के कारण संभवत: टीवीके का उदय

हुआ है। टीवीके संगठित प्रशंसक क्लब है। इसके ज्यादातर कार्यकर्ता विजय के प्रशंसक हैं, जो फिल्मों के रिलीज पर खुशी मनाने के आदी हैं, नीतियों पर बहस करने के नहीं। डीएमके, एआईएडीएमके, सीपीआई, सीपीआई-एम, वीसीके आदि जैसी सभी प्रमुख कार्यकर्ता-आधारित पार्टियों के विपरीत, जो राजनीतिक शिक्षा पर जोर देती हैं। भारत में राजनीतिक 'स्टार्टअप' को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में रख सकते हैं। एक, किसी आंदोलन से उत्पन्न, दो, किसी पारिवारिक नाम, व्यक्तित्व या वंश के इर्द-गिर्द निर्मित, और तीन, किसी सामाजिक या धार्मिक समूह या विशिष्ट विचारधारा के इर्द-गिर्द विकसित। आंध्र में अस्सी के दशक में एनटी रामाराव के नेतृत्व में तेलुगु देशम को और दिल्ली में आम आदमी पार्टी को काफी सफलता मिली, पर दोनों मौकों पर जनता को विकल्पों की जबर्दस्त जरूरत थी। वर्ष 1977 में जनता पार्टी भी राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा ही 'स्टार्टअप' था। 1967 में जब देश में गठबंधन सरकारों का दौर शुरू हुआ, तब भी वह विकल्प खोजने का प्रयास था। टीडीपी ने अपने गठन के एक साल बाद, 1983 में आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनावों में भारी बहुमत से जीत हासिल की थी और 201 सीटें जीती थीं। एजीपी ने 1985 में अपने गठन के तुरंत बाद असम आंदोलन से जुड़े स्वतंत्र प्रतिनिधियों के समर्थन से सरकार बनाई थी। 1977 में जनता पार्टी ने तो 'यूनिकॉर्न' के रूप में ही शुरुआत की थी, पर वह अपने अंतर्विरोधों को संभाल नहीं पाई और देखते ही देखते अनेक दलों में विभाजित हो गई। बहुत कम राजनीतिक स्टार्टअप 'यूनिकॉर्न' बन पाए हैं। कुछ को समय लगा, जबकि कुछ विफल हो गए। पिछले साल बिहार में जन सुराज पार्टी के साथ ऐसा ही हुआ।

अभिनेता से राजनेता बने कमल हासन की मक्काल नीधि मय्यम भी ऐसी ही एक पार्टी है। बिहार में पुष्पम प्रिया चौधरी के नेतृत्व वाली प्लूरल्स पार्टी जैसी कई छोटी-छोटी नवगठित पार्टियां हैं। वहीं, जीतन राम मांझी का हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (धर्मनिरपेक्ष) और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा जैसी छोटी पार्टियां भी हैं, जिनकी महत्वाकांक्षाएं सीमित हैं और वे कुछ खास क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। उ.प्र. में निषाद पार्टी, पीस पार्टी, अपना दल (सोनेलाल) और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (एसबीएसपी) जैसी पार्टियां हैं, पर ज्यादातर सीमित जातीय क्षेत्र होने के कारण बड़े स्तर पर जगह नहीं बना पाईं।

उच्च शिक्षा को नई दिशा देने की कोशिश

विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक, 2025' को एक व्यापक और दूरगामी सुधार के रूप में देखा जा सकता है। यह विधेयक मौजूदा नियामक संस्थाओं जैसे यूजीसी, एआईसीटीई और एनसीटीई को प्रतिस्थापित कर एक एकीकृत, अधिक सक्षम और पारदर्शी ढांचे की स्थापना का विचार रखता है। इसका उद्देश्य केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता, स्वायत्तता और जवाबदेही को नई दिशा देना भी है।

प्रो. डॉ. भरत

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां उसे न केवल अपने पारंपरिक ढांचे की सीमाओं को पार करना है, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप स्वयं को पुनर्गठित भी करना है। इसी संदर्भ में प्रस्तावित 'विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक, 2025' को एक व्यापक और दूरगामी सुधार के रूप में देखा जा सकता है। यह विधेयक मौजूदा नियामक संस्थाओं जैसे यूजीसी, एआईसीटीई और एनसीटीई को प्रतिस्थापित कर एक एकीकृत, अधिक सक्षम और पारदर्शी ढांचे की स्थापना का विचार रखता है। इसका उद्देश्य केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता, स्वायत्तता और जवाबदेही को नई दिशा देना भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के पांच वर्ष पूर्ण होने के इस महत्वपूर्ण चरण पर इसका आगमन महज संयोग नहीं है, बल्कि इसे शिक्षा सुधारों की अगली स्वाभाविक और अनिवार्य कड़ी के रूप में भी देखा जा सकता है।

तकनीकी शिक्षा, सामान्य शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के लिए अलग-अलग संस्थाएं होने के कारण नीतिगत समन्वय में कठिनाइयां उत्पन्न होती थीं। कई बार संस्थानों को समान कार्यों के लिए विभिन्न निकायों से अनुमति लेनी पड़ती थी, जिससे न केवल समय की बर्बादी होती थी, बल्कि प्रक्रियाएं भी जटिल बन जाती थीं। इस विधेयक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है-तीन स्वतंत्र परिषदों का गठन, जो उच्च शिक्षा के अलग-अलग पहलुओं को संभालेंगी। इसके अंतर्गत पहली परिषद है 'शिक्षा विनियमन परिषद', जो संस्थानों के पंजीकरण, अनुमोदन और नियामक अनुपालन से जुड़ी होगी। दूसरी परिषद है 'शिक्षा गुणवत्ता परिषद', जो संस्थानों के मूल्यांकन और मान्यता का कार्य करेगी। तीसरी परिषद है 'शिक्षा मानक परिषद', जिसका कार्य पाठ्यक्रम, शिक्षण परिणाम और न्यूनतम शैक्षणिक मानकों को निर्धारित करना होगा।

इसका अर्थ यह है कि 'विनियमन', 'गुणवत्ता' और 'मानक' को अलग-अलग संस्थागत ढांचों में विभाजित करके एक अधिक स्पष्ट और प्रभावी शासन प्रणाली स्थापित करने का प्रयास। विधेयक का दृष्टिकोण केवल संरचनात्मक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उच्च शिक्षा की मूल भावना को भी पुनर्परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है। इसका लक्ष्य संस्थानों को अधिक स्वायत्त बनाना, उन्हें नवाचार और अनुसंधान के लिए प्रोत्साहित करना तथा शिक्षा को परिणाम-आधारित और छात्र-केंद्रित बनाना है।

इस विधेयक का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है वित्तीय सहायता और नियमन के कार्यों का पृथक्करण। पहले यूजीसी अनुदान देने और नियमन दोनों कार्य करता था। नए ढांचे में इन दोनों कार्यों को अलग करने का प्रयास किया गया है, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ने की उम्मीद है। पहले पहल यह विधेयक प्रशासनिक जटिलताओं को कम करने और निर्णय लेने की प्रक्रिया को तेज करने में सहायक हो सकता है। दूसरा, स्पष्ट मानकों और सुदृढ़ प्रत्यायन प्रणाली के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव है। तीसरा, यह भारतीय विश्वविद्यालयों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद कर सकता है, जिससे विदेशी छात्रों और निवेश को आकर्षित किया जा सके। लेकिन चिंताएं यह भी हैं कि इसके माध्यम से अत्यधिक केंद्रीकरण का खतरा है। एक ही संस्था में व्यापक शक्तियां केंद्रित होने से संघीय ढांचे और राज्यों की भूमिका प्रभावित हो सकती है।

इसके अलावा, वित्तीय प्रावधानों की अस्पष्टता भी एक गंभीर मुद्दा है, जो विशेष रूप से राज्य विश्वविद्यालयों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यदि नियामक परिषद की शक्तियां अत्यधिक बढ़ जाती हैं, तो संस्थानों की स्वायत्तता सीमित हो सकती है। विधेयक के संदर्भ में बड़ी चिंता संघीय ढांचे पर इसके संभावित प्रभाव को लेकर है। यद्यपि भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत संघ-सूची की प्रविष्टि 66 में उच्चतर शिक्षा या अनुसंधान संस्थानों तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों में समन्वय एवं मानकों के निर्धारण का प्रावधान है। नि:संदेह, इतने व्यापक बदलाव को लागू करना अपने आप में एक बड़ी परीक्षा है। संस्थागत संस्कृति, प्रशासनिक प्रक्रियाओं और मानव संसाधनों में समन्वय स्थापित करना दीर्घकालिक और जटिल प्रक्रिया होगी। यदि इसे सावधानीपूर्वक और चरणबद्ध तरीके से लागू नहीं किया गया, तो यह सुधार अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाएगा। अंतत: विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक, 2025 एक ऐसा प्रयास है, जो भारत की उच्च शिक्षा को नई दिशा देने की क्षमता रखता है।

गुस्से को इन योगासनों से करें कंट्रोल

तनाव और गुस्सा आज हर दूसरे आदमी की आम समस्या बन चुका है। कई बार छोटी-छोटी बातों पर भी लोगों को गुस्सा आ जाता है, जिससे रिश्ते और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर प्रभाव पड़ता है। हालांकि कई विशेषज्ञ योग को गुस्सा और तनाव नियंत्रित करने का एक प्रभावी तरीका मानते हैं। योग न केवल शरीर को स्वस्थ बनाता है, बल्कि मन को शांत और संतुलित रखने में भी मदद करता है। नियमित योगाभ्यास से मानसिक संतुलन बेहतर होता है और व्यक्ति अपने भावनाओं पर बेहतर नियंत्रण रख पाता है। अगर आप रोज कुछ मिनट योग और प्राणायाम का अभ्यास करते हैं, तो धीरे-धीरे गुस्से पर नियंत्रण और मानसिक शांति महसूस कर सकते हैं। योग का मुख्य उद्देश्य शरीर, मन और सांस के बीच संतुलन बनाना है। जब हम योगासन और प्राणायाम करते हैं, तो शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ता है और दिमाग शांत होने लगता है। इन योगासनों के अलावा पर्याप्त नींद लें, कैफीन और जंक फूड कम करें, नियमित एक्सरसाइज करें, सकारात्मक सोच अपनाएं। इन आदतों के साथ योग करने से बेहतर परिणाम मिल सकते हैं।

प्राणायाम

योग के साथ-साथ प्राणायाम भी बहुत असरदार माना जाता है। अनुलोम विलोम प्राणायाम और भ्रामरी प्राणायाम गुस्से पर काबू रखने में फायदेमंद हैं। अनुलोम विलोम के अभ्यास से सांस लेने की यह तकनीक दिमाग को शांत करती है और तनाव कम करती है। वहीं भ्रामरी प्राणायाम में भंवरे जैसी आवाज़ निकालते हुए सांस छोड़ते हैं। यह अभ्यास गुस्सा, चिंता और बेचैनी को कम करने में मदद करता है। प्राणायाम करने के लिए आपको पद्मासन की मुद्रा में बैठना है और अपनी आंखें बंद कर लेनी है। ध्यान रहे पूरे आसन के दौरान आपको अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखनी है। सांसों पर सारा का सारा ध्यान रखना है। नाक के जरिए धीरे-धीरे लंबी और गहरी सांस लें। इसके बाद सांसों को भी धीरे-धीरे बाहर निकालना है। ध्यान के दौरान इस बात को गौर करें कि आपका पूरा ध्यान अपनी सांस पर हो।

सुखासन

सुखासन ध्यान और प्राणायाम के लिए सबसे आसान आसन माना जाता है। सुखासन का नियमित अभ्यास करने से मन स्थिर रहता है। सांसों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है और गुस्सा व चिंता कम होती है। इस आसन को करने के दौरान पीठ को सीधा रखें। अब दोनों पैरों को बारी-बारी से क्रॉस करते हुए घुटनों से भीतर की तरफ मोड़ें। पैरों को आराम देते हुए बैठें। ध्यान रखें कि घुटने जमीन को छूते रहें। आंखें बंद करके गहरी सांस लें और कुछ मिनट इसी मुद्रा में बैठें रहे।

बालासन

यह योगासन मन को शांत करने के लिए बेहद प्रभावी माना जाता है। बालासन के अभ्यास से कई फायदे होते हैं, जैसे- तनाव कम होता है। बालासन मानसिक शांति देता है। दिमाग को रिलैक्स करता है।

शवासन

शवासन शरीर और दिमाग को पूरी तरह आराम देने वाला आसन है। इसका अभ्यास मानसिक तनाव कम करता है। दिमाग को रिलैक्स करता है और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। गुस्सा नियंत्रित करने के लिए रोज 10 से 15 मिनट योगासन करना चाहिए और 5-10 मिनट प्राणायाम को देने चाहिए।

योगाभ्यास के फायदे

क्रोध (गुस्सा) प्रबंधन और मानसिक शांति के लिए योग एक अत्यंत प्रभावी साधन है। योगासन न केवल शरीर को लचीला बनाते हैं, बल्कि तंत्रिका तंत्र को शांत करके मन को स्थिर करते हैं। सकारात्मक सोच विकसित होती है। नियमित योग से धीरे-धीरे गुस्से की तीव्रता कम हो सकती है। योग से शरीर में तनाव पैदा करने वाले हार्मोन का स्तर कम होता है, जिससे क्रोध शांत होता है। नियमित योगाभ्यास से भावनाओं पर नियंत्रण बढ़ता है, जिससे गुस्सा कम आता है और चिड़चिड़ापन दूर होता है।

हंसना मना है

सोनू अपने दोस्त मिंटू को ज्ञान बांट रहा था अगर परीक्षा में पेपर बहुत कठिन हो तो आंखें बंद करो, गहरी सांस लो और जोर से कहो- ये सब्जेक्ट बहुत मजेदार है इसलिए अगले साल फिर पढ़ेंगे।

एक बुढ़िया अम्मा को एक भिखारी मंदिर के बाहर मिला...भिखारी - भगवान के नाम पर कुछ दे दो मां जी, चार दिन से कुछ नहीं खाया। बुढ़िया 500 का नोट निकालते हुए बोली - 400 खुले हैं? भिखारी - हां हैं मां जी, बुढ़िया - तो उससे कुछ लेकर खा लेना...

डॉक्टर - आपका लड़का पागल कैसे हो गया? पिता- वो पहले जनरल बोगी में सफर करता था। डॉक्टर - तो इससे क्या? पिता- लोग बोलते थे थोड़ा खिसको, थोड़ा खिसको, तभी से खिसक गया।

सोनू पत्नी से- सुनती हो, अगर तुम्हारे बाल इसी रफ्तार से झड़ते रहे, तो मैं तुमको तलाक दे दूंगा। पत्नी- हे भगवान, मैं पागल अब तक इनको बचाने की कोशिश कर रही थी।

लड़की बंटी से- क्या कर रहे हो? बंटी - मच्छर मार रहा हूं। लड़की - अब तक कितने मारे? बंटी- पांच मारे.. तीन फीमेल और दो मेल। लड़की - कैसे पता चला कि मेल कौन है और फीमेल कौन? बंटी - तीन आईने पर बैठे थे और दो बियर के पास।

कहानी — जमींदार और मजदूर के कर्म का फल

एक गांव में जमींदार और उसके एक मजदूर की साथ ही मौत हुई। दोनों यमलोक पहुंचे। धर्मराज ने जमींदार से कहा, आज से तुम मजदूर की सेवा करोगे। मजदूर से कहा, अब तुम कोई काम नहीं करोगे, आराम से यहां रहोगे। जमींदार परेशान हो गया। पृथ्वी पर तो मजदूर जमींदार की सेवा करता था, पर अब उल्टा होने वाला था। जमींदार ने कहा, भगवन, आप ने मुझे यह सजा क्यों दी? मैं तो भगवान का परम भक्त हूं। प्रतिदिन मंदिर जाता था। देसी घी से भगवान की आरती करता था और बहुमूल्य चीजें दान करता था। धर्म के अन्य आयोजन भी मैं करता ही रहता था। धर्मराज ने मजदूर से पूछा, तुम क्या करते थे पृथ्वी पर? मजदूर ने कहा, भगवन, मैं गरीब मजदूर था। दिन भर जमींदार के खेत में मेहनत मजदूरी करता था। मजदूरी में उनके यहां से जितना मिलता था, उसी में परिवार के साथ गुजारा करता था। मोह माया से दूर जब समय मिलता था तब भगवान को याद कर लेता था। भगवान से कभी कुछ मांगा नहीं। गरीबी के कारण प्रतिदिन मंदिर में आरती तो नहीं कर पाता था, लेकिन जब घर में तेल होता तब मंदिर में आरती करता था और आरती के बाद दीपक को अंधेरी गली में रख देता था ताकि अंधेरे में आने-जाने वाले लोगों को प्रकाश मिले। धर्मराज ने जमींदार से कहा, आपने सुन ली न मजदूर की बात? भगवान धन-दौलत और अहंकार से खुश नहीं होते। भगवान मेहनत और ईमानदारी से कमाने वाले व्यक्ति से प्रसन्न रहते हैं। यह मजदूर तुम्हारे खेतों में काम करके खुश रहता था और सच्चे मन से भगवान की आराधना करता था। जबकि तुम आराधना ज्यादा धन पाने के लिए करते थे। तुम मजदूरों से ज्यादा काम लेकर कम मजदूरी देते थे। तुम्हारे इन्हीं कामों के कारण तुम्हें मजदूर का नौकर बनाया गया है ताकि तुम भी एक नौकर के दुख-दर्द को समझ सको।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — व्यावसायिक यात्रा मनोनुकूल लाभ देगी। लाभ के मौके बार-बार प्राप्त होंगे। विवेक का प्रयोग करें। बेकार बातों में समय नष्ट न करें। निवेश शुभ रहेगा। लाभ में वृद्धि होगी।

वृषभ — कोई बड़ी समस्या से सामना हो सकता है। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। किसी विशेष क्षेत्र में सामाजिक कार्य करने की इच्छा रहेगी।

मिथुन — व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा। दूसरों के काम में हस्तक्षेप न करें। चोट व रोग से बचें। सेहत का ध्यान रखें। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं।

कर्क — जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे बाद में पछताना पड़े।

सिंह — व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल रहेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा। नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। भाग्य का साथ रहेगा। सभी काम पूर्ण होंगे।

कन्या — संचित कोष में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। शेयर मार्केट में सोच-समझकर निवेश करें। संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। झंझटों से दूर रहें।

तुला — विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। व्यापार मनोनुकूल रहेगा। नौकरी में कार्य की प्रशंसा होगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यस्तता के चलते स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृश्चिक — प्रयास अधिक करना पड़ेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में कमी रह सकती है। दु:खद समाचार की प्राप्ति संभव है। व्यर्थ भागदौड़ रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा।

धनु — कुंआरों को वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। प्रयास सफल रहेंगे। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में उन्नति होगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। प्रमाद न करें।

मकर — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। कारोबार में मनोनुकूल लाभ होगा। प्रमाद न करें।

कुम्भ — घर-बाहर सहयोग प्राप्त होगा। भेंट व उपहार की प्राप्ति संभव है। बेरोजगारी दूर होगी। अचानक कहीं से लाभ के आसार नजर आ सकते हैं। कर्ज लेना पड़ सकता है।

मीन — चिंता तथा तनाव रहेंगे। बेवजह कहासुनी हो सकती है। जोखिम न लें। आंखों को चोट व रोग से बचाएं। हल्की हंसी-मजाक किसी से भी न करें। नकारात्मकता रहेगी।

रविवार को 'दादी की शादी' की कमाई में हुआ इजाफा

बॉलीवुड | मसाला

नीतू कपूर और कपिल शर्मा की फिल्म 'दादी की शादी' फिल्म को थिएटर्स में रिलीज हुए तीन दिन हो चुके हैं। फिल्म रिलीज से पहले से ही सुर्खियों में थी।

दादी की शादी फिल्म 8 मई को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म की शुरुआत कुछ खास नहीं रही। पहले दिन इसने केवल 60 लाख रुपये की कमाई की थी। वहीं दूसरे दिन फिल्म ने 1.06 करोड़ रुपये की कमाई की, लेकिन तीसरे दिन इसकी कमाई में इजाफा देखने को मिला है।

फिल्म ने तीसरे दिन यानी रविवार को 1.70 करोड़ की कमाई की है। इसके साथ फिल्म का टोटल नेट कलेक्शन 3.45 करोड़ रुपये का हो गया है। वीकएंड होने के चलते भी फिल्म को फायदा मिला है। रिलीज के बाद से ये फिल्म का सबसे ज्यादा कलेक्शन रहा है।

दादी की शादी भारत में ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में रिलीज हुई है। एक तरफ जहां इसका भारत में टोटल नेट कलेक्शन 3.45 करोड़ रुपये का हो गया है, वहीं फिल्म ने वर्ल्डवाइड 4.14 करोड़ की कमाई कर ली है।

'दादी की शादी' फिल्म को आशिष आर मोहन ने लिखा और डायरेक्ट किया है। फिल्म में नीतू कपूर, कपिल शर्मा, शरत कुमार और सादिया खतीब भी अहम भूमिकाओं में हैं। वहीं रिद्धिमा कपूर साहनी इस फिल्म से बड़े पर्दे पर अपनी शुरुआत कर रही हैं।

शिल्पा शेट्टी लेकर आ रही हैं नया कुकिंग शो 'मां है ना'

शिल्पा शेट्टी कुंद्रा बतौर होस्ट एक शो की कमान संभालने वाली हैं। वे कॉमेडी कुकिंग शो होस्ट करेंगी, जिसमें जेन-जी सेलेब्स अपनी मां के साथ हिस्सा लेंगे। इस शो का नाम है- मां है ना। 10 एपिसोड की यह नॉन-फिक्शन सीरीज छह Gen-Z सेलेब्रिटीज और उनकी मांओं को एक साथ लाएगी। रविवार को इस शो का एलान हुआ है।

यह शो ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर स्ट्रीम होगा। जी-5 ने रविवार को शो की घोषणा की है। इसमें जेन-जी सेलेब्स और उनकी मांओं के बीच कुकिंग चैलेंज, दिल को छू लेने वाली बातचीत और परिवार के बीच प्यार भरे पल देखने को मिलेंगे। शो मां है ना के जरिए रसोई के परिवेश के जरिए आधुनिक जेनेरेशन-Z के लाइफस्टाइल और पारंपरिक मैटरनल सूझबूझ के बीच टकराव देखने को मिलेगा, वह भी मजेदार अंदाज में।

शिल्पा शेट्टी ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट साझा करके इस शो को लेकर अपडेट भी दिया है। उन्होंने कैप्शन लिखा है, मैं एक नए शो के साथ वापस आ गई हूं! स्वाद, ड्रामा और मां का जजमेंट परोसते हुए... थोड़ा-सा मेसी, ढेर सारी मस्ती और एकदम जादू! मां है ना। जल्द आ रहा है, सिर्फ जी5 पर।

अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी कुंद्रा बतौर होस्ट एक शो की कमान संभालने वाली हैं। वे कॉमेडी कुकिंग शो होस्ट करेंगी, जिसमें जेन-जी सेलेब्स अपनी मां के साथ हिस्सा लेंगे। इस शो का नाम है- मां है ना। 10 एपिसोड की यह नॉन-फिक्शन सीरीज छह Gen-Z सेलेब्रिटीज और उनकी मांओं को एक साथ लाएगी। आज इस शो का एलान हुआ है। यह शो ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर स्ट्रीम होगा।

जी-5 ने रविवार को शो की घोषणा की है। इसमें जेन-जी सेलेब्स और उनकी मांओं के बीच कुकिंग चैलेंज, दिल को छू लेने वाली बातचीत और परिवार के बीच प्यार भरे पल देखने को मिलेंगे। शो मां है ना के जरिए रसोई के परिवेश के जरिए आधुनिक जेनेरेशन-Z के लाइफस्टाइल और पारंपरिक मैटरनल सूझबूझ के बीच टकराव देखने को मिलेगा, वह भी मजेदार अंदाज में।

बॉलीवुड | मन की बात

मेरे लिए सबसे बड़े टीचर मेरे बुरे और मुश्किल समय रहे हैं : कियारा

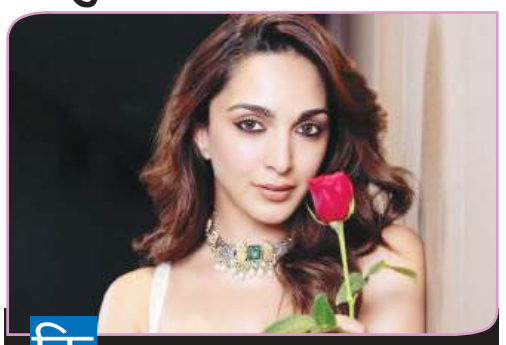

कियारा आडवाणी इन दिनों 'टॉक्सिक- ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' की रिलीज की तैयारी कर रही हैं, जिसमें वह यश के साथ नजर आएंगी। हाल ही में उन्होंने अपने करियर के उतार-चढ़ाव को लेकर खुलकर बात की है। हाल ही में राज शमानी के पॉडकास्ट पर बातचीत के दौरान कियारा ने बताया कि उनकी डेब्यू फिल्म 'फुगली' के बाद उन्हें काफी कठिन समय से गुजरना पड़ा था। उन्होंने कहा, 'मुझे सच में लगता है कि हर अनुभव से मैंने कुछ न कुछ सीखा है और उसी ने मुझे आज बनाया है। मेरे लिए सबसे बड़े टीचर मेरे बुरे और मुश्किल समय रहे हैं। कियारा ने यह भी बताया कि लोग आज भी उनकी पहचान उनकी हिट फिल्मों 'एमएस धोनी द अनटोल्ड स्टोरी' और 'कबीर सिंह' से जोड़ते हैं, जबकि उनकी पहली फिल्म 'फुगली' थी, जिसे उस समय ज्यादा लोगों ने नहीं देखा था। उन्होंने कहा, आज भी लोग सोचते हैं कि मेरी पहली फिल्म 'एमएस धोनी' या 'कबीर सिंह' थी क्योंकि वो हिट फिल्में थीं। लेकिन मेरी पहली फिल्म 'फुगली' थी। उसे बहुत कम लोगों ने देखा।' एक्ट्रेस ने आगे बताया कि 'फुगली' के बाद उनके करियर में एक लंबा इंतजार का दौर आया था। उस फिल्म को क्रिटिक्स ने जरूर सराहा, लेकिन लोगों से इसे अच्छा रिसपॉन्स नहीं मिला। कियारा ने कहा, 'उस फिल्म के बाद एक बड़ा खाली समय था क्योंकि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा नहीं चली। लेकिन क्रिटिक्स ने मेरे काम की तारीफ की थी। फिर भी इसका कोई फायदा काम के रूप में नहीं मिला। उन्होंने यह भी बताया कि उस समय उन्हें लगातार ऑडिशन देने पड़ते थे, कभी सेलेक्शन होता था तो कभी नहीं। उन्होंने कहा, 'यह एक लंबा इंतजार का दौर था। उस समय आपके पास ऑप्शंस भी कम होते हैं। जब आपकी फिल्म कमर्शियल तौर पर नहीं चलती, तो मौके भी कम मिलते हैं। उन्होंने आगे कहा कि एमएस धोनी और कबीर सिंह के बाद उनके करियर में स्थिरता आई, जिसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। एक्ट्रेस आने वाले दिनों में यश के साथ 'टॉक्सिक' फिल्म में नजर आएंगी।

दुनिया का इकलौता मर्द, जो देता है बच्चों को जन्म, पिता के गर्भ में पलते हैं बच्चे!

प्रकृति ने कई अनोखे चमत्कार किए हैं, लेकिन सीहॉर्स (समुद्री घोड़ा) शायद सबसे हैरान करने वाला उदाहरण है। दुनिया में यही एकमात्र ऐसा जीव है जिसमें पुरुष बच्चे को गर्भ में पालता है और आखिरकार जन्म भी देता है। जी हां, यहां मर्द ही प्रेग्नेंट होता है! सीहॉर्स की यह अनोखी प्रजनन प्रक्रिया जीव विज्ञान की किताबों में सबसे रोचक अध्यायों में से एक है। सामान्यतः ज्यादातर प्रजातियों में मादा गर्भ धारण करती है, लेकिन सीहॉर्स में भूमिकाएं उलट जाती है। मादा सीहॉर्स अंडे पैदा करती है, लेकिन उन्हें मेल के शरीर में ट्रांसफर कर देती है। इसके बाद मेल ही लेबर पेन को सहता है और बच्चे को जन्म देता है। सीहॉर्स की प्रजनन प्रक्रिया बेहद दिलचस्प है। सबसे पहले नर और मादा एक लंबे कोर्टशिप डांस में शामिल होते हैं। वे अपनी पूंछों को एक-दूसरे से लपेटते हैं, साथ-साथ तैरते हैं और घंटों तक नृत्य करते हैं। इस डांस के बाद मादा अपने अंडों को मेल की पेट पर बनी विशेष थैली में डाल देती है। थैली में अंडे पहुंचते ही नर उन्हें पालने लगता है। इसके बाद नर का शरीर अंडों की देखभाल शुरू कर देता है। थैली के अंदर ब्लड वेसल्स बनते हैं जो अंडों को ऑक्सीजन और पोषण मुहैया कराते हैं। यह प्रक्रिया स्तनधारी जानवरों की प्लेसेंटा की तरह काम करती है। गर्भावस्था की अवधि प्रजाति के अनुसार 10 दिन से लेकर 6 हफ्ते तक हो सकती है। जब बच्चे पूरी तरह विकसित हो जाते हैं तो नर सीहॉर्स को प्रसव पीड़ा होती है। वह अपने शरीर को बार-बार मोड़ता है, संकुचन करता है और तेज झटकों के साथ सैकड़ों-हजारों बच्चों को पानी में छोड़ता है। एक बार में 100 से 2000 तक छोटे-छोटे बेबी सीहॉर्स जन्म ले सकते हैं। जन्म के बाद बच्चे मिनिएचर वयस्कों जैसे दिखते हैं और तुरंत स्वतंत्र जीवन शुरू कर देते हैं। माता-पिता उनकी आगे कोई देखभाल नहीं करते। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह व्यवस्था प्रजाति के अस्तित्व के लिए बेहद फायदेमंद है। मादा अंडे देने के तुरंत बाद नई अंडे पैदा करने की प्रक्रिया शुरू कर सकती है, जबकि नर पुराने अंडों की देखभाल करता है। इससे प्रजनन की दर बहुत बढ़ जाती है। सीहॉर्स की थैली ना सिर्फ सुरक्षा प्रदान करती है बल्कि अंदर के पानी की लवणता को भी नियंत्रित करती है ताकि बच्चे समुद्र के पानी के लिए तैयार हो सकें। हाल के अध्ययनों में पाया गया है कि गर्भावस्था के दौरान नर के शरीर में हार्मोनल बदलाव होते हैं जो मादा हार्मोन की तरह काम करते हैं।

अजब-गजब | शादी के लिए इस देश में लगता है बाजार

यहां खरीदे जाते हैं दूल्हा-दुल्हन! माता-पिता लगाते हैं बोली

आज के दौर में जहां डेटिंग ऐप्स और सोशल मीडिया के जरिए रिश्ते बनाना आम हो गया है, वहीं चीन का एक शहर आज भी पारंपरिक तरीके से जीवनसाथी ढूंढने की परंपरा निभा रहा है। यह शहर है शंघाई, जहां हर सप्ताहांत एक अनोखा 'मैरिज मार्केट' सजता है। यहां दिलचस्प बात यह है कि इस बाजार में युवा खुद कम ही नजर आते हैं। उनकी जगह उनके माता-पिता या दादा-दादी उनके लिए उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश में पहुंचते हैं और साथ में बच्चों का पूरा बायोडाटा लेकर आते हैं।

इस बायोडाटा में उम्र, लंबाई, शिक्षा, नौकरी, आय, और यहां तक कि घर या कार जैसी संपत्ति की जानकारी भी शामिल होती है। माता-पिता इन जानकारियों को कागज पर लिखकर छतरियों पर टांग देते हैं या जमीन पर सजा देते हैं, ताकि दूसरे लोग उन्हें पढ़ सकें। इसके बाद वे इस बाजार में घूम-घूमकर दूसरे प्रोफाइल देखते हैं और अगर कोई रिश्ता पसंद आता है, तो वहीं बातचीत शुरू कर देते हैं। यह प्रक्रिया पूरी तरह पारंपरिक है, लेकिन आज भी काफी प्रभावी मानी जाती है।

दरअसल, चीन के बड़े शहरों में रहने वाले कई युवा अपने करियर और व्यस्त जीवनशैली में इतने उलझे रहते हैं कि उन्हें खुद साथी ढूंढने का समय नहीं मिल पाता। ऐसे में उनके माता-पिता यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते हैं। यह सिर्फ एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि परिवार की भागीदारी का भी प्रतीक है, जहां शादी जैसे महत्वपूर्ण फैसले में पूरे परिवार की भूमिका होती है।

शंघाई में 'हुकोऊ' यानी स्थायी निवास का दर्जा भी रिश्तों में अहम भूमिका निभाता है। जिन लोगों के पास यह दर्जा होता है, उन्हें बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और आवास के अधिक अवसर मिलते हैं, इसलिए यह भी एक महत्वपूर्ण कारण बन जाता है। हालांकि शंघाई को चीन के सबसे आधुनिक और विकसित शहरों में गिना जाता है, फिर भी यह मैरिज मार्केट इस बात का उदाहरण है कि परंपराएं आज भी समाज में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह अनोखा तरीका दिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा किस तरह एक साथ चल सकती हैं, और कैसे परिवार आज भी रिश्तों को जोड़ने में अहम भूमिका निभा रहा है।

नहीं चलेगी भाजपा की फूट डालो और राज करो की नीति : मान

» सीएम बोले- पंजाब की साझा संस्कृति मजबूत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया है कि भाजपा की राजनीति समुदायों के बीच दरार पैदा करने और डर का माहौल बनाकर वोट हासिल करने पर टिकी है। गिद्दरबाहा निर्वाचन क्षेत्र के गांव साहिब चंद में एक जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब की धरती गुरुओं और संतों की है, यहां नफरत के बीज कभी नहीं पनप पाएंगे। मान ने कहा कि भाजपा ने महाराष्ट्र, हरियाणा, बिहार, उत्तर प्रदेश और बंगाल में फूट डालने वाली राजनीति के जरिए सत्ता हासिल की लेकिन पंजाब में वह कभी सफल नहीं हो पाएगी क्योंकि पंजाबी हर त्यौहार एक साथ मनाते हैं।

मान ने यहां गिद्दरबाहा निर्वाचन क्षेत्र के साहिब चंद गांव में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, कुछ राजनीतिक दल धर्म के नाम पर लोगों को बांटने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब उन महान गुरुओं, साधु-संतों की पवित्र भूमि है, जिन्होंने आपसी प्रेम, सहिष्णुता और सद्भाव का मार्ग दिखाया है। मुख्यमंत्री ने अपनी 'शुक्राना यात्रा' के बारे में कहा कि उन्होंने यह यात्रा सर्वशक्तिमान ईश्वर का आभार व्यक्त करने के लिए शुरू की है, जिन्होंने उन्हें गुरु ग्रंथ साहिब के अपमान को रोकने के लिए सख्त कानून बनाने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब के अपमान को रोकने के लिए कड़े कानून बनाने और उन्हें लागू करने के लिए, यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आशीर्वाद, फूल और सिरोपा (सम्मान का वस्त्र) देकर उनका स्वागत किया। मान ने कहा, जब भी गुरु ग्रंथ साहिब के अपमान की घटनाएं हुईं, लाखों लोगों का मन आहत हुआ। हमेशा यह उम्मीद रहती थी कि दोषियों को पकड़ा जाएगा और सजा दी जाएगी, लेकिन कानून में खामियों के कारण वे मानसिक रूप से अस्थिर होने का दावा करके सजा से बच जाते थे। मुख्यमंत्री ने हालांकि सवाल उठाया कि मानसिक अस्थिरता का दावा करने वाला व्यक्ति केवल गुरु ग्रंथ साहिब को ही क्यों निशाना बनाएगा।

भाजपा की राजनीति डराने-धमकाने पर आधारित

भाजपा की राजनीति समुदायों के बीच फूट डालने और फिर वोट के लिए दोनों पक्षों को डराने-धमकाने पर आधारित है। पंजाब को ऐसी ताकतों को सिरे से खारिज करना चाहिए क्योंकि राज्य ने पूर्व में ऐसे बुरे दिन देखे हैं जिन्होंने इसके विकास को पटरी से उतार दिया है।" मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब की शांति, सांप्रदायिक सद्भाव और भाईचारे को राजनीतिक लाभ के लिए कभी भी भंग नहीं होने दिया जाएगा। मान ने आरोप लगाया कि हिंसा, विभाजन और सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न करना भाजपा की "पहचान" है और ये उसकी राजनीति के अभिन्न अंग हैं।

संजीव अरोड़ा ने भाजपा में शामिल होने के बजाय ईडी की गिरफ्तारी को चुना

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पंजाब के मंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता संजीव अरोड़ा की इस बात के लिए प्रशंसा की कि उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने के बजाय प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गिरफ्तारी का सामना करना चुना। शनिवार को अरोड़ा की गिरफ्तारी के बाद, केजरीवाल ने दावा किया कि यह कार्रवाई इसलिए की गई क्योंकि मंत्री ने भाजपा में शामिल होने से इनकार कर दिया था। ङ्ग पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा कि मुश्किल समय में ही इंसान का चरित्र सामने आता है। संजीव अरोरा ने भाजपा में शामिल होने के बजाय जेल जाना बेहतर समझा। उन्हें सलाम।

कश्मीर में शराबबंदी नहीं होगी : उमर

» सीएम बोले- वो पिएं जिनका धर्म इजाजत देता है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर शराब पर पाबंदी लगाने की मांग मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सिरे से खारिज कर दी है। उन्होंने कहा कि हमारा धर्म इसकी इजाज़त नहीं देता, और न ही हम चाहते हैं कि लोग इस ओर बढ़ें, लेकिन जिसका धर्म इजाजत देता है, वो पिये। हम इस पर प्रतिबंध नहीं लगाएंगे। दरअसल, मीरवाइज उमर फारूक ने जम्मू-कश्मीर सरकार से शराब नीति पर पुनर्विचार करने और केंद्र शासित प्रदेश में मादक पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया था। इसके बाद शराब बंदी का मुद्दा राज्य में गरमा गया है। शराबबंदी की मांग पर अब्दुल्ला ने कहा, पहले तो, ये शराब की दुकानें उन लोगों के लिए हैं जिनका धर्म उन्हें शराब पीने की इजाज़त देता है। दूसरे, जम्मू-कश्मीर में अब तक किसी भी सरकार ने इन दुकानों पर प्रतिबंध नहीं लगाया है।

मीरवाइज की शराब पर बैन की मांग

मीरवाइज उमर फारूक ने शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर सरकार से शराब नीति पर पुनर्विचार करने और केंद्र शासित प्रदेश में मादक पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया। मीरवाइज ने मादक पदार्थों के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने की अपील करते हुए कहा कि एक प्रकार की लत से लड़ते हुए दूसरे को बढ़ावा देना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि युवाओं की सुरक्षा के लिए एक सार्थक रणनीति में सभी प्रकार के नशे को खत्म करना आवश्यक है।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम शराब की खपत बढ़ाना चाहते हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि जिनका धर्म शराब पीने की इजाज़त देता है, वे पी सकते हैं। हमारा धर्म इसकी इजाज़त नहीं देता, और न ही हम चाहते हैं कि लोग इस ओर बढ़ें। उमर अब्दुल्ला ने बताया, हमारा शराब की दुकानों को बंद करने का कोई विचार नहीं है, लेकिन हमारी सरकार ने दो-तीन कदम उठाए हैं। पहला, हमने कोई नई शराब की दुकान नहीं खोली है, दूसरा, हमने यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया कि कोई भी दुकान ऐसी जगहों पर न हो, जहां हमारे युवाओं पर गलत प्रभाव पड़ सकता है. जम्मू-कश्मीर के बाहर से आने वाले लोग भी इन दुकानों का इस्तेमाल करते हैं ये दुकानें स्थानीय निवासियों के लिए नहीं हैं बात इतनी ही सरल है।

सहारनपुर में हिंसा यूपी की कानून व्यवस्था पर सवाल : मायावती

» कहा- पुलिस प्रशासन करे निष्पक्ष कार्रवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में देवबंद थाना क्षेत्र के गांव लालवाला में भूमि विवाद में दो पक्षों में संघर्ष के बाद दलित उत्पीड़न सामने आने के बाद अब यह मामला राजनीतिक तूल पकड़ता जा रहा है। इस मामले में बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने भीटिप्पणी कर निष्पक्ष कार्रवाई की मांग की है और उन्होंने दलित वर्ग से घायल लोगों के लिए चिंता भी जाहिर की है। बीएसपी सुप्रीमो ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, यूपी के जिला सहारनपुर के गाँव लालवाला में एक भूमि में फोटो/तस्वीर रखने को लेकर लोगों के बीच हुये विवाद और फिर संघर्ष में दलित वर्ग के अनेक लोगों के भी घायल होने से वहां स्थिति काफी तनावपूर्ण बनी हुई है।

पुलिस व प्रशासन को वहां हालात को काबू में रखने के लिये तत्काल निष्पक्ष कार्रवाई करनी चाहिये। साथ ही, दोनों वर्गों के लोगों से भी अपील है कि वे शान्ति-व्यवस्था व आपसी सद्भाव बनाये रखें और मामले को ताक़त से नहीं बल्कि क़ानूनी तरीक़े से ही सुलझायें। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने राज्य सरकार की कैबिनेट के विस्तार के बाद भारतीय जनता पार्टी पर तीखा बयान दिया है। मंत्रिमंडल विस्तार को बीजेपी का आंतरिक मामला बताते हुए बसपा चीफ ने कहा है कि इसका लाभ आम जन को होना चाहिए।सोशल मीडिया साइट एक्स पर मायावती ने लिखा कि वैसे तो मंत्रिमण्डल का घटाना-बढ़ाना व विस्तार आदि सत्ताधारी पार्टी का आन्तरिक राजनीतिक चिन्तन का मामला ज़्यादा होता है और इसीलिये उत्तर प्रदेश मंत्रिमण्डल के कल हुये विस्तार के बारे में कुछ भी टीका-टिप्पणी करना उचित नहीं होगा।

लोकतंत्र को भाजपा कुचल रही: संजय

» आप सांसद बोले- ईडी भाजपा की सुपारी किलर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के सांसद व यूपी के प्रभारी संजय सिंह ने पंजाब में आम आदमी पार्टी के नेताओं पर ईडी की कार्रवाई को लेकर संजय सिंह ने भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा हर चुनावी राज्य में ईडी, सीबीआई, चुनाव आयोग और केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल कर लोकतंत्र को कुचल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग में बैठे ज्ञानेश कुमार के माध्यम से पूरे देश में चुनावी घोटाले किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले अशोक मित्तल पर छापेमारी कर उन्हें भ्रष्टाचारी बताया गया, लेकिन भाजपा में शामिल होने के बाद उन्हें वाशिंग मशीन में धुला हुआ घोषित कर दिया गया।

अब पंजाब में संजीव अरोड़ा को निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि तीन दिन तक छापेमारी के बावजूद कुछ नहीं मिला तो झूठा मामला बनाकर गिरफ्तारी कर ली गई। संजय सिंह ने कहा कि ईडी भाजपा का सुपारी किलर बन चुकी है। जहां चुनाव होता है वहां यह एजेंसी सक्रिय हो जाती है और राजनीतिक विरोधियों की राजनीतिक हत्या करने का काम करती है। उन्होंने कहा कि संजीव अरोड़ा की कंपनी पर मोबाइल निर्यात में फर्जीवाड़े का आरोप लगाया गया जबकि हर मोबाइल का आईएमईआई नंबर होता है और आसानी से पता लगाया जा सकता है कि मोबाइल निर्यात हुआ या नहीं। उन्होंने कहा कि भाजपा केवल दबाव बनाकर विरोधियों को अपनी पार्टी में शामिल कराना चाहती है।

अकबरनगर से 18 सौ परिवारों को उजाड़कर 250 वर्गफीट के छोटे घरों में ठूंसा

संजय सिंह ने कहा कि 1,800 परिवारों को अकबरनगर से उजाड़कर बसंतकुंज में बसाया गया, जहां उन्हें मात्र 250 वर्गफीट के छोटे घरों में ठूंस दिया गया। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर इन समस्याओं के समाधान की मांग करने की बात कही। उन्होंने बुलडोजर राजनीति पर हमला बोलते हुए कहा, जब मुसलमानों के घरों पर बुलडोजर चलता है तो कुछ लोग खुशी मनाते हैं, लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि भाजपा किसी की सगी नहीं है। कल हिंदुओं और दलितों की बारी भी आएगी। कहा अगर जरूरत पड़ेगी तो वह इन विस्थापितों की लड़ाई सड़क से लेकर संसद तक और फिर न्यायपालिका से भी लड़ेंगे।

मुंबई की प्लेऑफ की उम्मीदों पर फिरा पानी

» भुवनेश्वर-क्रूणाल ने बिखेरा जलवा

» रोहित ने की सर्वाधिक आईपीएल मैच खेलने के मामले में धोनी-कोहली की बराबरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रायपुर। भुवनेश्वर की अगुवाई में गेंदबाजों के घातक प्रदर्शन और क्रूणाल की तूफानी बल्लेबाजी के दम पर आरसीबी ने मुंबई इंडियंस को दो विकेट से हरा दिया। रायपुर में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई ने तिलक वर्मा की अर्धशतकीय पारी की मदद से 20 ओवर में सात विकेट पर 166 रन बनाए। जवाब में आरसीबी ने निर्धारित ओवरों में आठ विकेट खोकर 167 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। मुंबई के लिए इस मैच में कॉर्बिन बॉश ने चार और दीपक चाहर ने दो विकेट लिए।

इस जीत के साथ आरसीबी अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गई और प्लेऑफ की उम्मीदों को और मजबूत कर लिया है। वहीं, मुंबई इंडियंस का सफर लगभग समाप्त हो चुका है। फिलहाल टीम 11 में से आठ मुकाबले हारकर अंक तालिका में छह अंकों के साथ नौवें स्थान पर है जबकि लखनऊ 10वें पायदान पर है। इस तालिका में दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर क्रमश: सनराइजर्स हैदराबाद, गुजरात टाइटंस और पंजाब किंग्स मौजूद है। वहीं इस मैच में रोहित शर्मा ने आईपीएल इतिहास में सर्वाधिक मैच खेलने वाले संयुक्त रूप से नंबर-1 खिलाड़ी बन गए। यह उनका 278वां आईपीएल मैच था। महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली भी इतने ही आईपीएल मैच खेल चुके हैं। इस लिस्ट में दूसरे पायदान पर रवींद्र जडेजा ने 265 मैच खेले हैं, जबकि दिनेश कार्तिक 257 मुकाबलों के साथ तीसरे पायदान पर हैं। आईपीएल में अब तक सिर्फ 12 ही खिलाड़ी 200 मैच खेले हैं। रोहित शर्मा ने दो शतकों के साथ 7,289 रन बनाए हैं। जबकि कोहली ने आठ शतकों के साथ 9,040 रन जुटाए हैं।

भुवनेश्वर ने रचा इतिहास: चौथी बार एक सीजन में पूरे किए 20 विकेट

रायपुर। आरसीबी के अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ महज 23 रन देकर चार विकेट झटके। इस प्रदर्शन के साथ उन्होंने आईपीएल 2026 में अपने 20 विकेट पूरे कर लिए। इसके साथ ही वह आईपीएल इतिहास में चौथी बार किसी एक सीजन में 20 या उससे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए। भुवनेश्वर कुमार अब आईपीएल में सबसे ज्यादा बार एक सीजन में 20 विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। उन्होंने यह उपलब्धि इससे पहले 2014, 2016 और 2017 में हासिल की थी। इस मामले में उन्होंने लसिथ मलिंगा और जसप्रीत बुमराह की बराबरी कर ली है, जिन्होंने भी चार-चार बार यह उपलब्धि हासिल की है। इस मामले में शीर्ष पर युजवेंद्र चहल हैं, जिन्होंने पांच अलग-अलग आईपीएल सीजन में 20 विकेट पूरे किए हैं। 36 वर्षीय भुवनेश्वर कुमार का आईपीएल करियर भी बेहद शानदार रहा है। उन्होंने अब तक 201 मुकाबलों में 219 विकेट हासिल किए हैं। दो बार उन्होंने एक पारी में पांच विकेट लेने का कारनामा भी किया है।

महेंद्र सिंह धोनी ने 278 आईपीएल मुकाबलों में 5,439 रन बनाए हैं।

टीएमसी की हार के बाद से पार्टी में रार

पूर्व सीएम की अपील नहीं मानी सीपीआई व कांग्रेस ने, पार्टी प्रमुख ने तीर-कमान कसने किए शुरू, ममता ने प्रवक्ताओं पर गिराई गाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में पार्टी की हार के बाद तृणमूल कांग्रेस में उठापटक शुरू हो गई है। पार्टी ने अपने तीन प्रवक्ताओं को पार्टी से निकाल दिया है,पार्टी ने आरोप लगाया है कि ये लोग पार्टी विरोधी टिप्पणी कर रहे थे। इसलिए इन्हें छह साल तक पार्टी से सस्पेंड किया है। उधर टीएमसी प्रमुख के द्वारा विपक्षी पार्टियों के एक जुट होने के आहवान सीपीआई ने ठुकरा दिया है उसके बाद से बंगाल में नया सियासी समीकरण और माहौल बनने की संभवना दिखने लगी है।

उधर पार्टी बयान के मुताबिक, प्रवक्ता कोहिनूर मजूमदार, रिजु दत्ता और कार्तिक घोष को पार्टी अनुशासन तोड़ने के आरोप में सस्पेंड कर दिया गया। यह कार्रवाई पार्टी की ओर से पांच प्रवक्ताओं को कारण बताओ नोटिस जारी करने के कुछ दिनों बाद हुई। इन लोगों पर आरोप है कि विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद लीडरशिप और पार्टी की चुनावी रणनीति की आलोचना करने वाले कमेंट्स किए थे। गौरतलब है कि बंगाल चुनाव में नतीजों में भाजपा ने 207 सीटें जीतीं, जबकि 294 सदस्यों वाली विधानसभा में टीएमसी 80 सीटों पर सिमट गई।

अभिषेक बनर्जी के काम करने के तरीके पर उठाए थे सवाल

ये नोटिस टीएमसी सांसद डेरेक ओब्रायन ने जारी किए हैं। वह पार्टी की डिसिप्लिनरी कमिटी के सदस्य हैं, सस्पेंड किए गए तीन नेताओं के अलावा, कृष्णेंदु चौधरी और पापिया घोष को भी नोटिस दिए गए थे।

भाजपा को राजनीतिक जमीन देने का काम खुद ममता बनर्जी ने किया था : सौम्य ऐच

हालांकि, ममता की इस पहल को विपक्षी दलों ने तुरंत नकार दिया। कांग्रेस प्रवक्ता सौम्य ऐच रॉय ने तृणमूल कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि ममता बनर्जी अब उन अल्ट्रा-लेफ्ट समूहों का समर्थन मांग रही हैं, जिन पर 13 में कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर हमलों के आरोप लगे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस ने पिछले चुनावों में कांग्रेस को लगातार बदनाम किया और राज्य में भाजपा को मजबूत होने का मौका दिया। रॉय ने कहा कि बंगाल में भाजपा को राजनीतिक जमीन देने का काम खुद ममता बनर्जी ने किया था।

ममता अलोकतांत्रिक नेता : मोहम्मद सलीम

वहीं, मोहम्मद सलीम के नेतृत्व वाली सीपीएम ने भी ममता बनर्जी की अपील को पूरी तरह खारिज कर दिया। सीपीएम राज्य सचिव मोहम्मद सलीम ने तृणमूल कांग्रेस को भ्रष्ट और सांप्रदायिक करार देते हुए कहा कि भाजपा के खिलाफ लड़ाई का मतलब तृणमूल कांग्रेस के साथ खड़ा होना नहीं हो सकता।सीपीआई के राज्य सचिव स्वपन बंदोपाध्याय ने भी साफ शब्दों में कहा कि ममता बनर्जी जैसी तानाशाही और अलोकतांत्रिक नेता के साथ हाथ मिलाने का कोई सवाल ही नहीं उठता।

तृणमूल कांग्रेस दक्षिणपंथी और अधिनायकवादी पार्टी : अभिजीत मजूमदार

उधर, सीपीआई (एम-एल) लिबरेशन के अभिजीत मजूमदार ने तृणमूल कांग्रेस को दक्षिणपंथी और अधिनायकवादी पार्टी बताया। वहीं एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलित ब्यूरो सदस्य अमिताभ चटर्जी ने कहा कि ममता बनर्जी अब ऐसी अपील इसलिए कर रही हैं क्योंकि उन्हें राजनीतिक हार का सामना करना पड़ा है। इस बीच, पश्चिम बंगाल के नए मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने भी ममता बनर्जी की अपील को महत्वहीन बताया। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी अब राज्य की राजनीति में कोई खास राजनीतिक महत्व नहीं रखतीं।

कांग्रेस और लेफ्ट ने टीएमसी को भ्रष्ट पार्टी बताया

पश्चिम बंगाल की राजनीति में भाजपा के खिलाफ संयुक्त विपक्षी मोर्चा बनाने की ममता बनर्जी की अपील को कांग्रेस और वाम दलों ने सिरे से खारिज कर दिया है। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने एक वीडियो संदेश जारी कर कांग्रेस, सीपीएम और अन्य वामपंथी दलों से भाजपा के खिलाफ एकजुट होने की अपील की थी। उन्होंने भाजपा को सबसे बड़ा दुश्मन बताते हुए सभी विपक्षी ताकतों से साथ आने का आह्वान किया था।

एआईडीएमके के भीतर राजनीतिक घमासान

» तमिलनाडु विस चुनाव के नतीजों के बाद उथलपुथल

» एक गुट ने पलानीस्वामी के खिलाफ मोर्चा खोला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एआईडीएमके के भीतर एक बड़ा राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है। पार्टी की करारी हार के बाद अब नेतृत्व परिवर्तन की मांग तेज हो गई है। सूत्रों के अनुसार, वरिष्ठ नेता सी.वी. शनमुगम के नेतृत्व वाले गुट ने पार्टी प्रमुख एडप्पादी के. पलानीस्वामी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है और उनसे तत्काल इस्तीफे की मांग की है।

हालांकि, सूत्रों ने यह भी बताया कि पार्टी के कुछ तबकों से बढ़ते दबाव के बावजूद ईपीएस इस्तीफ़ा देने को तैयार नहीं हैं। शीर्ष सूत्रों के मुताबिक, पार्टी के वरिष्ठ नेता सी.वी. शनमुगम के साथ जुड़े विधायकों और कई पूर्व मंत्रियों ने ईपीएस को साफ़ कह दिया है कि लगातार चार चुनावी हार के बाद वे अब उनकी लीडरशिप को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। 23 अप्रैल को हुए चुनावों में एआईडीएमके 293 सीटों में से सिर्फ़ 47 सीटें ही जीत पाई थी।

इससे पहले, ऐसी चर्चा ज़ोरों पर थी कि शनमुगम के नेतृत्व वाला गुट अभिनेता-राजनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कज़गम) के साथ गठबंधन कर सकता है। उस समय टीवीके सरकार बनाने के लिए ज़रूरी संख्या जुटाने में लगी हुई थी। शनमुगम सहित 30 से ज़्यादा विधायक पुडुचेरी के एक रिसॉर्ट में डेरा डाले हुए थे। उस समय विजय के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ गठबंधन की चर्चा ज़ोरों पर थी।

विजय पेरम्बूर सीट से बने रहेंगे एमएलए

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय ने तिरुचिरापल्ली पूर्व विधानसभा क्षेत्र से इस्तीफा दे दिया और पेरम्बूर सीट बरकरार रखने का फैसला किया। यह घटनाक्रम चेन्नई के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित एक भव्य समारोह में तटीय राज्य के नौवें मुख्यमंत्री के रूप में उनके शपथ ग्रहण के कुछ घंटों बाद सामने आया। तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) के प्रमुख विजय ने तमिलनाडु में 2026 के विधानसभा चुनाव में दो सीटों - तिरुचिरापल्ली पूर्व और पेरम्बूर - से चुनाव लड़ा था और दोनों में जीत हासिल की थी।

सभी विभागों का एक श्वेतपत्र जारी करेंगे नए सीएम

टीवीके प्रमुख सी. जोसेफ विजय के रविवार को एक भव्य समारोह में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद नवनियुक्त मंत्रियों ने पारंपरिक शासन से इतर एक आमूलचूल बदलाव का संकेत दिया, जिसमें सभी विभागों का एक 'श्वेतपत्र' ऑडिट और प्रशासन में 'शून्य हस्तक्षेप' की नीति की बात कही गई। विजय की जीत को एक ऐतिहासिक बदलाव के रूप में देखा जा रहा है, जिसने लगभग छह दशकों के द्रविड़ राजनीतिक वर्चस्व को उलट दिया है।

आलमगीर आलम को मिली जमानत

» दो साल बाद जेल से बाहर आएंगे झारखंड के पूर्व मंत्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। झारखंड के पूर्व मंत्री आलमगीर आलम को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार में आलमगीर आलम को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत दे दी।

आलमगीर आलम दो साल से जेल में थे। सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिलने के बाद अब उनके जल्द ही जेल से बाहर आने की उम्मीद है। मालूम हो कि विधानसभा चुनाव के दौरान आलमगीर आलम को मनी लॉन्ड्रिंग मामले मे गिरफ्तार किया गया था। तब वो जेल में ही थे। हाईकोर्ट ने आलमगीर आलम को जमानत देने से इन्कार कर दिया था। हाईकोर्ट के फैसले को आलमगीर आलम ने सुप्रीम कोर्ट मे चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड के पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता आलमगीर आलम के साथ ही उनके पर्सनल सेक्रेटरी संजीव लाल को भी जमानत दी है।

हिंदू मैरिज एक्ट प्रावधान चुनौती पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, याचिका खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू मैरिज एक्ट की धारा तेरह दो तीन को चुनौती देने वाली जनहित याचिका को खारिज कर दियायह प्रावधान केवल पत्नी को तलाक मांगने का अधिकार देता है जब पति-पत्नी एक वर्ष से अधिक साथ नहीं रहतेयाचिका में इस प्रावधान को लिंग भेदभावपूर्ण बताया गया था लेकिन कोर्ट ने इसमें दखल देने से मना किया।

सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू मैरिज एक्ट की धारा 13(2)(3) को चुनौती देने वाली एक जनहित याचिका को खारिज कर दिया. यह प्रावधान केवल पत्नी को यह अधिकार देता है कि यदि भरण-पोषण के डिक्री के बाद एक वर्ष या उससे अधिक समय तक पति-पत्नी के बीच साथ में रहना पुन: शुरू नहीं होता, तो वह तलाक की मांग कर सकती है. इस याचिका में इस प्रावधान को लिंग भेदभावपूर्ण बताया गया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इसमें दखल देने से इनकार कर दिया और कहा कि यह एक विशेष कानून है। इस मामले की सुनवाई सीजेआई सूर्य कांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने की. खुद पेश हुए याचिकाकर्ता ने अदालत से कहा कि वह इस प्रावधान पर पुनर्विचार चाहते हैं और यह अधिकार पुरुष और महिला दोनों को मिलना चाहिए. इस पर चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया ने पूछा कि इस प्रावधान से उन्हें कैसे प्रभावित होता है और क्या वह पुरुषों के स्वयंभू नेता हैं. जब याचिकाकर्ता ने कहा कि वह स्वयं इस स्थिति से प्रभावित हैं और इससे अन्य पुरुषों को भी उम्मीद मिल सकती है, तब ष्ट्छ्वढ्ढ कांत ने टिप्पणी की कि यही वह उनसे स्वीकार करवाना चाहते थे. उन्होंने यह भी कहा कि याचिकाकर्ता पर भारी जुर्माना क्यों न लगाया जाए।

चंबा के ककीरा में इनोवा खाई में गिरी, छह की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बनीखेत/चंबा। हिमाचल प्रदेश के जिला चंबा में भटियात के ककीरा में आज सुबह तीन बजे के करीब पर्यटकों से भरी एक गाड़ी दुर्घटना का शिकार हो गई। हादसे में छह लोगों की मौत हुई है जबकि चार घायल हैं। दुर्घटनाग्रस्त इनोवा क्रिस्टा गाड़ी में गुजरात के टूरिस्ट सवार थे। ये लोग मनाली से डलहौजी घूमने जा रहे थे। हादसे के वक्त क्षेत्र में भारी बारिश हो रही थी। गाड़ी में ड्राइवर समेत कुल 10 लोग सवार थे।

घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत के चलते मेडिकल कॉलेज टांडा रेफर किया गया है। बताया जा रहा है कि दुर्घटनाग्रस्त वाहन मंडी नंबर की टैक्सी इनोवा क्रिस्टा थी। हादसे के बाद क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। प्रारंभिक जांच में खराब मौसम और सड़क पर फिसलन को

हादसे की बड़ी वजह माना जा रहा है। पुलिस अधीक्षक विजय कुमार सकलानी ने कहा कि पुलिस ने मामला दर्ज कर दुर्घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है। प्रशासन की ओर से मृतकों और घायलों के परिजनों को सूचना देने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। ककीरा घार के पास हुए दर्दनाक सड़क हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस टीम को मौके पर भेज दिया गया था।

गुजरात के आणंद में ट्रक-टेंपो की भिड़ंत, दो महिलाओं समेत चार लोगों की मौत

गुजरात के आणंद जिले में ट्रक और टेम्पो में टक्कर होने से 4 लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही 5 लोग घायल हो गए। पुलिस ने घटना के कारण को लेकर बताया कि, सोमवार की सुबह टेम्पो सड़क किनारे खड़े एक ट्रक के पिछले हिस्से से टकरा गया। जिसके कारण इतने लोगों की जान चली गई। वहीं, तारापुर पुलिस स्टेशन के इंस्पेक्टर मयूर शर्मा ने आगे बताया कि मरने वाले चार लोगों में एक 5 साल का बच्चा, दो महिलाएं और एक पुरुष शामिल है; जबकि, अन्य 5 लोग घायल है। टेम्पो में सवार लोग दाहोद से मजदूरी करने के लिए जा रहे थे। फिलहाल घायलों को तारापुर के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया है। इसके अलावा घटना को लेकर स्थानीय लोगों का कहना है कि, यह इलाका हादसों के लिहाज से संवेदनशील है, लेकिन प्रशासन ने यहां कोई चेतावनी वाला साइन बोर्ड नहीं लगाया है।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा